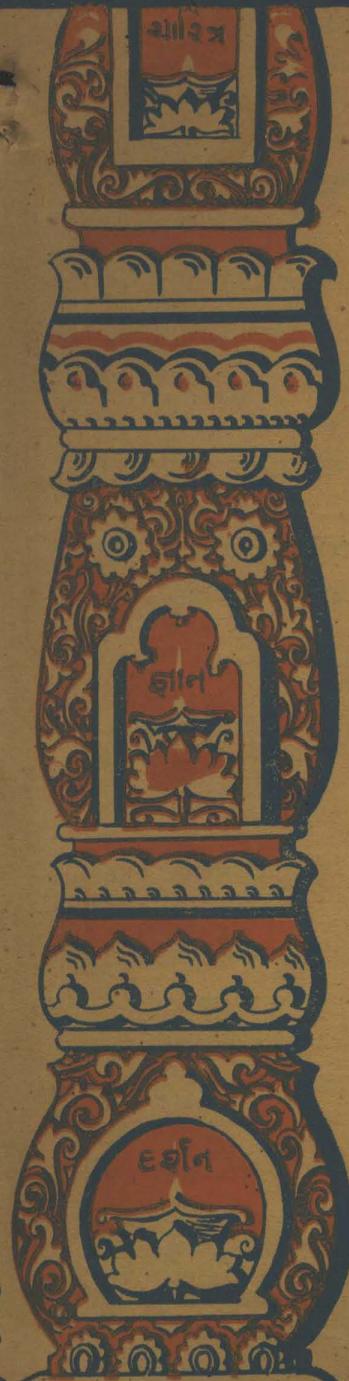
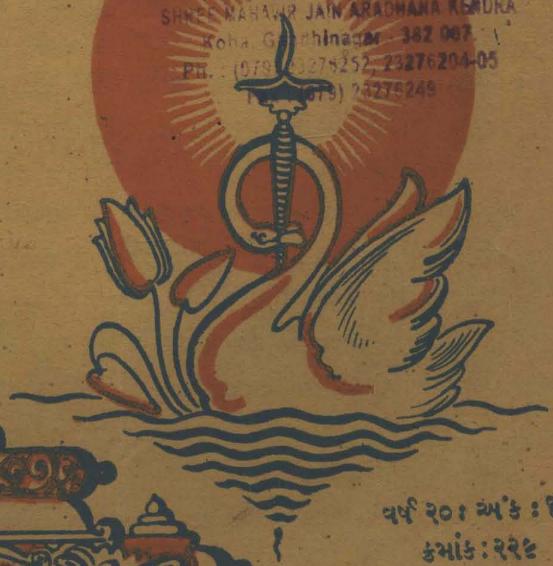


૨૦૧૮



શ્રી  
દર્શન  
જાન  
દર્શન!

ACHARYA SHRI KAILASAGARSURI GYANMANDIR  
SHREE MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA  
Kohal, Giridh Nagar - 382 067  
Ph. : (079) 23276252, 23276204-05  
Fax : (079) 23275249



દર્શન ૨૦૧૮ : ૧  
કુમારી : ૨૨૬

# विषय-दर्शन

अंक	विषय :	लेखक :	पृष्ठ :
१.	प्रासंगिक नोंद्ध	संपादक :	१
२.	साधु सभेलननु मेवेरुं संभारणुं	श्री. भोग्नलाल दी. चोक्सी :	३
३.	संस्कार	पू. श्री. यंद्रभेसागरणः	४
४.	‘प्रेमवाणी’ पुस्तिकाने जवाब	संपादकीयः	५
५.	निर्वाणु	श्री. ज्येष्ठभिज्ञुः	१०
६.	भोजपुरका जैन मंदिर	पू. सु. श्री. कांतिसागरजीः	१५
७.	‘उस्तरलाल’ यंत्र संबंधी पक्ष महत्वपूर्ण जैन ग्रंथ	श्री अगरचंदजी नाहटा :	२२
८.	नवी भद्र, सभायार	राईटर डॉ. वीजु—त्रीजु :	



## नवी भद्र

- १०१) पू. मुनिराज श्रीगौतमसागरण भ. ना. सदुपदेशथी श्री वीशा ओशावाल तपगच्छ जैन संघ, अंलाल.
- ४१) पू. उपा. श्रीसुभेसागरण भ. ना. सदुपदेशथी जैन वेतांगर मूर्ति पूजक श्रीसंघ, व्यालियर.
- २५) पू. प. श्रीकर्मिनिष म. ना. सदुपदेशथी श्री. कांतिलाल चीमनलाल, चूषेल.
- २५) पू. प. श्रीरामविजयण भ. ना. सदुपदेशथी श्री एलिसखीज भुशाल लुवन जैन उपाध्य, अमदावाद.
- २५) पू. प. श्रीदक्षिणिष म. ना. सदुपदेशथा श्री भण्डिलाल यत्रभूम गांधी, भुल्हड (सुअध).
- २०) पू. आ. श्री विजयर्थसुरीधरण भ. ना. सदुपदेशथी शा. हजरीभलण कस्तुरयंदण गूढा-आशोतरा.
- १५) पू. मुनिराज श्री होलतसागरण भ. ना. सदुपदेशथी श्री जैन संघ, चाणुरमा.
- १५) पू. प. श्री नवीनविजयण भ. ना. सदुपदेशथी श्री तपगच्छ अमर जैन शाणा, अंलाल.
- १५) पू. मुनिराज श्री भण्डिकचविजयण भ. ना. सदुपदेशथी शोड शांतिलाल वर्धमाननी पेढी, पालेज.
- १५) पू. प. श्री यशोलदविजयण भ. ना. सदुपदेशथी श्री कम्ती जैन तपागच्छ संघ, भाटुंगा.



॥ श्री अर्हम् ॥

अस्ति भारतवर्षीय जैन शेताम्बर मूर्तिपूजक  
मुनिसम्मेलन संस्थापित

श्री जैनधर्म सत्यप्रकाशक समितिनुं मामिक मुख्यपत्र  
जैशिंगभाईनी वाडी : धीकांटा रोड : अमदावाद (गुजरात)  
तंत्री : श्रीभन्दाल गोप्यादास शास्त्री

वर्ष : २०

विक्रम सं. २०१० : वीर नि. सं. २५७६ : क्र. स. १६५४

क्रमांक

अंक : १

आसा वडि ४ शुक्लार : १५ ओक्टोबर

२२९

# प्राचीन ज्ञानोद्धरण

‘श्री जैन सत्य प्रकाश’ आ अंकथी वीशमा वर्षमां प्रवेश करे छे,  
ऐ जणावतां अभने हुर्व थाय छे.

पूऱ्य आयोर्वेद अने मुनिवरो अने ते ते गामना श्रीसंघोच्चे आ मासिकना  
विकासमां एक या धीरु रीते महाद करी छे तेमनी अमे सालार नोंध लार्ह अे धीमे.

आ वर्षमां ‘जैन सत्त्वा साहित्य’ नामक संस्थाना कार्यवाहको तरक्की  
झ. ३३००) अँडे तेत्रीसंघेनो उदार रकमनी अभने लेट भणी छे. ते भाटे अमे  
कृतज्ञाता दर्शावीचे धीमे.

नवा वर्षमां प्रवेशतां भूतकाळनी केटलीये लीली-सूक्ष्म घटनाचे समरणुमां  
आवी जय छे. केटकेटलीये आशातीत योजनाचे साथे आ मासिक प्रगट थयु  
हुतुं, हेवोनी माझक योवन लार्ह ने ऐ जन्मयुं हुतुं. एना उच्च धोरणाना उद्देश  
अनुसार आज सुधी विविध विषयनी देखसामथी धीरसतु रह्यु छे, अने लैनेतरो  
तेमज सांप्रदायिक पक्षना आशेपेनो वणतो जवाब आपी जैन धर्मना सिद्धांतोने  
अक्षुण्णु अनांती राखवा ऐ हरहमेश तैयार रह्ये छे. आ दिशामां एक कणाकारनी  
पेठ अे ओगाणीस वर्ष सुधी साधना करी रह्यु छे, परंतु एनी कोई योजना आर्थिक  
स्थितिना कारणे अरमां आवी शक्ती नथी. कथासाहित्यमां रुचि राखनार वाचकवर्गने  
मासिकनी देखसामथी हणवी लागती नथी. भरिणुमे एनो प्रयार भर्याहित अन्यो छे

केटलाक वाचको मासिकना उच्च धोरणने आवकारे पाण्य छे. तेमनुं मंतव्य  
छे के, हणवा धोरणां केटलांक पत्रो समाजमां भौजुह छे त्यारे श्री जैन सत्य  
प्रकाशक ने धोरण लगाव्यु छे ते धोरणे हजु वधु विकास साधवा लार्ह अे. मतवाद  
के, तेनुं धोरणे हजु उच्चतर अनावयु लार्हिए.

२ ]

## श्री. जैन सत्य प्रकाश

[ वर्ष : २०

समाजमां प्रचारनी हृषिए अमारी सामे आ प्रक्ष एक समस्या भनी गयो। छे. ए समस्यानो हल श्रीसंघ तरइथी मणती महद द्वारा ज थड़ शके। अमुक स्थगना भातभर श्रीसंघ आ मासिकना वार्षिक अर्च पूरता नियमित महाहार अने तो मासिकने लवाज्ञ थाडें। उपर निर्भर रहेवुं न पडे अने मासिक एना चालु धौरणुमां विकास साधी शके। आ माटे समितिना खांच पूळग्ये। अने पूज्य आचार्यों तेमज पहस्थ मुनिराजे ते ते स्थगना श्रीसंघाने खास उपदेश आपे तो ज मासिकनी समस्या हल थशे एम अमारुं मानवुं छे।

आ स्थणे मासिकना देखडेने अमे वीसरता नथी। मासिकना धौरणुने साचवी राखवा देखडेना निष्काम भावे पोताथी घनतुं करे छे ए आपणु संतोषनी वात छे ए भाटे तेमनो केटेवा। आबार मानीमे तेटेवा ओछो। ज छे।

आस करीने पूज्य मुनिराजे अमे विनंति करीए छीए डे साहित्यना विविध विषयो। पैकी केमां तेब्बो। निष्प्रात होय ते विषय उपरना प्रमाण पुरस्सर देखो। तजी भोइदे तो मासिकना विकासमां तेमनो साथ अनिवार्य भद्रदृप अनशी।

अमे आशा राखीए डे पूज्य आचार्यो, मुनिराजे अने श्रीसंघ अमारी विनंति तरइ ध्यान आपी समाजना आ एकना एक तटस्थ मासिकतुं अस्तित्व अनावी राखवा माटे पोताथी घनतुं करशो।

—संपादक



[ अनुसंधान गृह : ३ थी चालु ]

पूर्ण प्रभाणुमां धननी सहाय देखाय, ज्यां लगी ए माटे चिंता जबी होय त्यां लगी तंत्रीनी धगश भाग्ये ज नवीनता आणु शके। वणी याह राखवुं डे आ जातना। साहित्यनो निभाव तो ग्राहकसंघ्या पर निर्भर नथी होतो। ए माटे सहायक हँड होवुं जडी छे।

जैन समाज श्रीसंघ अने पूज्य साहुगण्य ए वात मन पर ले तो, आ त्रुटि तो जेत-जेतामां संघार्थ जय तेम छे। उपरांत ज्ञान निमिते आवक पण चालु ज होय छे। भोया शहेरना संघी पासे जानभाते रक्मो जमा पडी होय छे। मासिक द्वारा भगवंतदेवनी वाणीनो तेओश्री प्रतिपादित सिद्धान्तोनो, थती गेरसमन्व दूर कर्वानो अप्राप्य थाप छे, गो संभृत जाननो प्रयार नहीं तो भीजुं छे पणु शु? आगमयथा डे अन्य धार्मिक पुरतंडाना प्रकाशनमां जानदृय वापरी शकाय छे ए जेतां आ जडी कार्यमां ए अरव्याय ओमां होय जेवुं जणातुं नथी।

देशकाण तरइ हृषि देशवता, अने जेगती फैटीना सतानोनुं मानस जेतां, पुरतंडा करतां जुहा जुहा विषेनी विविध रंगी वानणी भीरसतुं मासिक बनावीओ। वणी, ए कणाकृति एनां चिंतो आपीमे, अने वधु आकर्षक दृष्टमां तैयार करी अनुं मासिक भासक्ते प्रयार क्षेत्र अतिविस्तृत सरजन्य, एनो झेवावो। अवश्य वधु-ए कंध जेवी तेवी प्रभावना न न गणाय। गोरभपुरथी वैदिक धर्मतुं जे मासिक नीको छे ते तरइ नजर करो। सर्वतु साहित्य कार्यालय जे रीते प्रकाशन करी रहेव छे ते तरइ हृषि झेवो, तो सद्ग जणाशे डे धर्म-प्रयार विस्तारवे होय तो एनी द्यो काम करतां शीखतुं ज्ञेत्रिओ। आशा छे के समितिना मुनिराजे अने संधना आगेवातो आ हिंशामां आगण डग भरवानो निश्चय करशे।



## साधु-संभेदननुं भेदेहुं संभारणुं

लेखक—श्रीयुत मोहनलाल दीप्यंद चैक्सी

**राजनगरनुं साधु-संभेदन आने पाण मूर्तिमां नेवा सामे तरवरतु होय**  
अथवा तो ए समये थेवेता कार्यवाहीनी कंटक पाण झाँप्पी थती होय, अगर तो ए वेणाना  
हरावेमां कोई कार्य श्रव्यत दशा धरावतु होय तो ते पाण साधु महाराजनी समिति दारा  
प्रगट थतु 'श्री नैन सत्य प्रकाश' मासिक छ. घर्षु रम्यतियो डाणना गर्भमां विदीन  
थर्ट चूकी छे. हरावेना धर्वेयाओमां मोवडी तरीके भाग लज्जवनार धर्षाखरा सूरिपुंगवो  
आने आपणी नजर सामेथी विहाय थर्ट गया छे, अने हरावेनुं पालन पाण टेट्का अशे  
थाय छे अनुं भाप तो कोई विशिष्ट शानी १८ डिसी राते.

आम छां आ मासिक सांचे १८ उडाइतु-ट्युम्हे यावतुं भरती-ओटाना वहेणुमां  
ओइं आतुं पौतानां ओगणीश वर्ष पूरा करी वासमा वर्षमां प्रवेश करे छे, ए कंटक ओणा  
आनंदी वात नथी. भागनय त्यछ युवानीमा प्रवेशता अलं करे भाज्ये १८ ओणी मुखोपतो-  
मांथी पसार थवातुं होय छे. वयदा गाणामां विद्याध्ययनमां पाण प्रगति करवानी आवे छे  
अने अमां आगण दृच करतो ए अर्ले क बाणभाव त्यछ जेम अनुभवी युवक्ता स्थानने  
अलंकृत करे छे तेम आपणा आ मासिक पाण पौतानां पूर्व वर्षोमां डेट्कीये टाठी-भडी  
अनुभवी छे. अनुभव शानी लालीमा भेणवी, पौतानी अगस्त अने पुरवार करी छे. समाजमां  
वर्ता मतमतांतरेथी ए अलिम रहेव छे. के वानगी पीरसी छे तेनाथी नैन-नैनेतर समु-  
द्दायने लाल थेयो छे. डेट्कीये भ्रमणाओनो अना दारा धरस्क्केट कराये छे. साची समज  
झेलवावामां पाण अनो झाङा नानोसूनो नथी. आ सर्वमां अहस्तुत वात तो ए छे के समितिना  
पूल्य अमङ्गु लिन्न लिन्न विचारक्षेत्री धरावता होवा छां अमां अमाना कोई पाण मंतव्यने  
आ मासिकमां पगपेसांचे कराववानो यत्न सरप्पा सेवायो नथी. यथानामा तथागुणाः ए सत्त  
अनुसार यथाशक्ति अणु सत्य झेलवावानो सुप्रयास कर्त्तो छे. धृतिहासना अङ्कडा सांधवामां  
अना उपर डाणना कारणे पथरायेदा अधारां उलेच्यामां-नैनेतर विद्यनोना अधूरा अन्यासे  
सर्वपेला डायडा उक्कवामां साम्यपणाथी प्रेराई नैनधर्मना प्रसंगेने औद्धर्मना नामे  
सांकणी हेवाना थेवेदा प्रयासो सामे, नितरुं सख हलीचपूर्वक रजु करी ए सुधारवामां-अने  
प्राचीन रासाओ-शिवालेपो तेमज शेषाने आमजन समूल सामे आलेखवामां आ मासिकनो  
झांगा नैन समाजना उरकोई मासिकथी यढी जय तेवो छे.

वणी, अवसराचिन आस अङ्क प्रगट करी अने के महत्वनी वाचनसामग्री पूरी  
पाडी छे ए वात अन्यासीगणुनी ध्यान अहार न १८ होई राते. नव्यारे आ जाती महत्ता  
आपणी आंख सामे रमती होय लाई अना वीशमा वर्षे अने डेवा स्वांग सजववो ए  
अवस्थ विचारणीय छे. अनामां युवानीनो थनगनार आणुवा सारु, अने विपुल सामग्रीयी  
उरपुर करवा सारु, नियमिता जेवा आवस्यक कार्यने कायनी करवा सारु सौ प्रथम कार्य

[ जुँगो : अनुसंधान पृष्ठ : २ ]



## સં સ્કાર

**લેખક-પૂજય સુનિરાજ શ્રીચંદ્રપ્રભસાગરજી (ચિનભાતુ)**

**સ્વર્ણ** પોતાના જનાયો કિરણોથી જગતને પ્રકાશિત કરી રહ્યો હતો. નિર્નથનાથ લ. મહાવીર જાતના કિરણોથી પ્રાણીસમૃહનાં હૈયાંઓને પ્રકાશિત કરી રહ્યા હતા.

વસુંધરાને પાવન કરતા પ્રભુ આજ તો રાજગૃહનગરના મનોહર ઉદ્ઘાનમાં પથાર્યો છે. ગુણશિલકના ચૈયમાં પ્રભુએ આસન જમાયું છે. મગધરાજ અભિસાર અને પ્રણાળનો પ્રભુના દર્શને આવ્યા છે. સૌના હૈયામાં હર્ષ તો કંચાંય મા'તો નથી.

શું પ્રભુનાં શાન્ત નથનો છે! શું એમની સૌભાગ્ય આડૂતિ છે! શું એમનો સંયમથી દીપતો દેહ છે! અને વાણી...? વાણી તો નગાધિરાજ પરથી વહેની ગંગાની જેમ છુલ છુલ કરતી વહી રહી છે! સૌ એને સાંભળી પરમ પ્રસાદ અન્યા છે.

લારે સુર્જ જેવા તેજસ્વી અને ચન્દ્ર જેવા સૌભાગ્ય શ્રી ગૌતમે માનવહૈયામાં વૈજ્ઞાતો પ્રભ પૂજ્યો:

‘પ્રમો! આત્મા શાથી ભારે અની ગુરુત્વને પામે છે? અને કયા પ્રકારે હળવો અની લધુત્વને પામે છે?’

પ્રભ ડોડા હતો છાં સમ્પોદિત હતો. સૌને જીવનના ભારથી હળવા અનવું હતું એટલે સૌની જિજ્ઞાસા વંચી. જીવનો મર્મ જાણવા બધા ઉત્સુક અન્યા.

કરણા નીતરતાં નથનો સભા પર દર્શા. સભા ઉત્સુક હતી. પ્રભુ જોલ્યા:

‘ગૌતમ! જેમ કોઈ પુસ્તક અખંડ, સંકા, મોદા ને કાળા વિનાના તુંયણને દાખથી ભાંધી એના પર ચીકણી મારીના લેપ કરી એને સુકરી નાખે; પછી સુકાયેલા એ તુંયણ પર ફરી મારીનો લેપ કરે—આ રીતે આડ વાર લેપ કરેલા તુંયણે પાણીમાં નાખે તો, એ તરવાની શક્તિયાળું તુંયણું પાણીમાં તરતું નથી, પણ દૂસી જાય છે; તેમ, આત્મા પણ હિંસા, અસય, ચોરી, અસંયમ, કોષ, માન, માયા ને લોલના કુસંસ્કારથી લેપાયેલો મૃત્યુ પામને અયોગ્યિતામાં જાય છે.....’

હુદય ને જુહિને સ્પર્શનો આ ઉપહેંશ સાંભળી સભા ડાલી રહી હતી તાં વર્ધમાને કદ્યું:

‘પણ ગૌતમ! એ તુંયણ પરના લેપનો પહેલો થર ડોહવાય અને બિઅડી જાય તો એ થોડું અદ્ધર આવે, એમ કરતાં એ અધા થર જીતરી જલાં, તુંયણું ભૂળ સ્વભાવે હળવું થતાં, પાણીની સપાડી પર આવે છે. તે જ રીતે આત્મા પણ અંડિંસા, સત્ય, અચૌર્ય, સંયમ, અપરિયહ, ક્ષમા, મૃહૃતા, સરળતા ને નિર્દેખનાના આચારણથી કુસંસ્કારને નિર્મળી કરી, હળવો અની જોર્ધ્વગતિ પામે છે.....’

કુસંસ્કારથી આત્મા ગુરુત્વને પામી અંવાગામી બને છે. સુસંસ્કારથી આત્મા લધુત્વને પામી જોર્ધ્વગામી બને છે!

પ્રભુનાં દર્શન કરી પાછા દૂરતા સભાનનોના મુખ પર જાતનો પ્રકાશ હતો અને રાજગૃહના ધરથરમાં સંસ્કારશાની ચચ્ચી જમી હતી.



# ‘प्रेमवाणी’ पुस्तिकाने ज्वाण

( संपादकीय )

गत जन्माष्टमीना हिंसे श्रीवर्खमान अभय संधना प्रयारम्भी मुनि श्रीप्रेमचंहन्दुओ राजकोटनी विराणी पौषधशासागामां जे भाषण करेलु ते ‘प्रेमवाणी’ नामक पुस्तिकाङ्क्षे प्रगट थयुँ छे. तेना प्रकाशक छे—श्री चूनीलालबाई नागजु वेश तथा सांकणीआई धमांहा ट्रस्ट इंडि, राजकोट.

अभारी गतांक प्रगट थाय ए पहेलां अगाउना हिंसे ४ ए पुस्तिका विशे अमेटूँकी तोंधमान लर्ध शक्या अज्ञे अने विशेष नोंध आ अंकमां आपयाने अमे निर्झय कर्या ल्हो. हरभ्यान सौराष्ट्रमां १ नहि पछु गुजरात अने अन्ते स्थले पछु ए पुस्तिका साने प्रयण विशेष जग्यो छे. अनो प्रतीकार करता हरवा थया छे, जेती नक्लो अने केटलाय पत्रो अमने भल्या छे; अरेलु नोंधी अमे प्रस्तुत विषय उपर आवीज्ञे.

आप्यु ये भाषण जेतां मुनिश्रीनी भनोक्षानो घ्याल आवी ज्ञान छे. अमना उद्घृ वक्तव्यनो विचार करीजे ते पहेलां अमना भानसनो जे चिनार अमनी पंक्तिओ आप्यी रही छे ते ज्ञेष्ठां, पृष्ठ: १५मां तेहो कहे छे:

“मुंबाईची यालीने हुं अहिं आयो छुं. यां मार्गीभां भेवाडना के लेको रहे छे ते हस हस भाईल यालीने दर्शन करवा आव्या. अने अहिं तो हुं पोते आवी गयो छुं तो पछु केटलाय लेकोजे दर्शन कर्या नथी. कारणु के कोडीमां अनाज छे. हुःअमां बाधा समरणु करे छे.” यीजे स्थपे पृष्ठ: १३मां तेहो कहे छे:

“भेवाडमां जोंची श्रद्धा छे अने अहिं? अहिं तो लेको भेलेलमां भस्त छे. केटलाय भाषुसो ऐवा छे के जेमनां मने हुञ्चु सुधी दर्शन थयां नथी. तेहोजे पछु भारा दर्शन कर्यां नथी. हुं तो तेमना घेर ज्वा तैयार छुं. जे कोळी लर्ध ज्ञानार होय तो.”

मुनिश्रीने लेकोमां पोतानां दर्शन करावानी केटली तालावेली लागी छे ए आमांथी जाणुवा भयो छे, भेवाडीज्ञो हुःप्पी छे भाटे अमनी श्रद्धा जोंचा प्रकारनी छे अने भेलेलमां वसनारा गुजरातीज्ञेने अमना दर्शननी पडी नथी. त्यारे गुजरातीज्ञेनी दशा भेवाडीज्ञो जेवी थाय तो ४ अमनां दर्शन करी शके ने? आ छे अमनी भनोलावना!

आ ४ कारणु तेमाणे पोताना अधिकारपक्षी जाणु अटम अंगनो धडको करवा धायो होय अने पोताना पक्षने आवाहन करवानु होय तेम—भाषणमां टेर टेर मूर्ति, मंहिर, हेवद्रव्य (धर्मादा द्रव्य) प्रत्ये केवण संप्रदायिक अनूतथी पोतानो शैष हालयो छे. कोळी स्थले हेवद्रव्यनो गेवलाल लेवाये होय तो ते हकीकतने सर्व साधारण अनावी हेवद्रव्य प्रत्येनी पोतानी सुग व्यक्त करी छे. हेव-द्रव्यनो उपयोग तेना भक्तो अने आपणा भाई ए माटे थवो ज्ञेष्ठां अवो इतिवार्थ

६ ]

## श्री. नैन सत्य प्रकाश

[ वर्ष : २०

पण सूचव्यो छे. आ रेष अने सुग सौराष्ट्रमां शु परिषुम लावशे एने। अब मुनिशीर्ये क्यों होत तो आम भेदवानु औचित्य तेमने समजत भरु; पण दुःख साथे कडेवुं पडे छे के, मुनिशीर्ये वक्तव्य देश-काणे परभ्या विना शास्त्रीय परंपराना अपलाप जेवुं छे. एटलुं ज नहि हेतु अने युक्तिने पण विशेषी छे. अतां आ भाषण सौराष्ट्रमां अने अनेक स्थले श्वेतांशुर भूर्तिपूजक संघ अने स्थानवासी संघमां फाट्टूठ करवाने चिनगारीउप अनशो एवो अस्य सकारात् छे.

लैनेमां भूर्तिने भाननारा अने नहि भाननारा पक्षनो वाह वाँ जूनो छे. ए विशे पंद्रभा सैकाठी लर्धने आज सुधी भूम लभायुं छे. आम अतां भूर्तिने भानवा नहि भानवानो प्रश्न एक भीज उपर लादवो आजना युगमां शोषणस्पद नथी. लैन्यो. भूर्तिने भाने छे तेमना उपर विचित्र आक्षेपो करी चोताना पक्षनो साथ मेणववा भूर्तिपूजक अने स्थान-क्वासी संघमां वक्ती जल्ली एकताने तोडवानो अपतन डरवामां आज्यो छे. ए प्रथत्न आजना शिक्षित अने विचारक वर्गमां कुर्लेवा डारगत निवडशे ए भाटे विशेष चिंता डरवा जेवुं अमने लागतुं नथी. पण भीज वर्गमां एनो अनिष्ट पडेवा पडवानो संलय भरो. आस्ती ज चेतवण्यानो सूर संलग्नववो आजना युगमानसने अनुदप इरज लेखाशे एम अमे भानीये छीये.

मुनिशीर्ये क्वार्ट पण शास्त्रीय के परंपरानी हडीकत जणाव्या विना ज एकेन्द्रिय दिंसा, दैवत्य अने भूर्तिवाह विशे विंडाठी काम लीधुं छे. ए विशे अने अहीं घटतो ज्वाव आपी दृष्टी. मुनिशीर्ये पृष्ठ पांचमा उपर नोंद्ये छे:

**“नैनधर्ममां पण केटल्कीक व्यक्तिअस्या एकेन्द्रिय ज्ञानानी हया प्रति उपेक्षा अुष्टि राखे छे, जे डोवी न जेष्ट्ये.”**

मुनिशीर्ये आ हडीकत संलयतः प्रभुभूर्तिने यदाववामां आवतां पुण्योने उद्देशने करी छेय एम लागे छे. पुण्यपूजना औचित्य विशे जणावीये ते पहेवां अमने ए पूछवातुं मन थाय छे के, स्थानवासी साधुओना निवास भाटे अनतां स्थानक्षमामां एती ज्वव्यानो अश आउ नथी आवतो ? अमां एकेन्द्रिय तो शु पण एथेये वधु संतावाणा तस ज्ञानी विशाधना थया विना रहेती नथी ए हडीकत क्वां छुपाववा जेवी छे ? डेर डेर भालां थथेलां स्थानको शु साधुओना एक या भीज रीतना उपेशनुं इण नथी ? अने न होय तो शा आतर साधुओये एवां स्थानक्षमामां आश्रय लर्छ ज्वहिंसाने प्रेरणा आपवी नेष्ट्ये ?

ए प्रश्नना ज्वावमां ज पुण्यपूजन अने भूर्तिअस्या भाटे बनावातां भंहिशेनुं समाधान रहेलुं छे.

ए स्थानको पण सामान्य धर जेवां होतां नथी. अने भाटे इंड्हाणा उधरावीते मोर्यां आलीशान भजानो आजे पण बनाववामां आवे छे. ए भाटे एकडा थता द्रव्यने आपणे शु नाम आपीशु ? वणा, एवा इंड्हाणा उधरावता लैन आवडेना हाथे गेरवाभो-एवा दैवत्य भाटे बताववामां आव्या छे तेवा गेरवाभो-आवडेये लीधातुं पण वधु वर्णन सांलग्नवामां आवे छे. एवा ऐसानो गेरवाल लेनार दोषी गणाव्य के नहि ?

डार्छ पण सारा उद्देशनो डार्छ गेरवाल ले तेथा ते उद्देश येण्या छ एम डेम कडी शकाय ?

स्थानवासीयोंने नैन आगमे छपावा भाटे सारुं एवें इंड एकडूं क्युं छे. ए इंड जे ‘आहिय प्रकाशन इंड’ कडी शकाय अने तेवो उपयोग अनेक न थर्छ शके तो हेवमंहिरा

अंक : १ ]

## ‘प्रेमवाणी’ पुस्तिकाने जवाब

[ ७

माटे एकदा करायेला के कराता द्रव्यनो उपयोग भीजमां केम करी शकाय ? आपनारे जे उद्देश्यी द्रव्यदान क्युं होय ते उद्देशने पडो भूली ऐनो भीने उपयोग करवो एते भरेखर, विचासधात जेवुँ छे. दृस्तीपणाने कापेहो एम ज डहे छे. भीज उपयोग माटे हेवद्रव्यना आतानी साथेसाथ साधारण वरेव आताओ होय छे ज अने ऐनो लाल साधिमिंक भाईच्चा तेमज भीजआने पशु आपवामां आवे ज छे एते हडीका मुनिश्रीनी जाण अहार होय एम लागे छे. परंतु हेव माटे अर्पण करायेहु द्रव्य, तेते गमे ते नाम आणो, हेवमंहिरो अने हेवभूर्तिओ भाटे ज वापरी शकाय.

भूर्तिवाद गो सहेतुक शास्त्रीय परंपरा छे ज्यारे भूर्तिनो विशेष तो भारतमां मुखियमो आवा खार पछिया शइ थयो एते ऐतिहासिक हडीका विशे लाग्ये ज ए मत छे.

लैनधर्मनी संस्कृति आजसुवी आटवी दद्मूळ छे एते ऐना भाविरो, भूर्तिओ अने तेनी उपासनाना कारणे छे. ऐनी सामे डेवलाये आकमणे थयां, विद्धी आव्यां, प्रत्यावाता पृथ्वा अतां ये ए संस्कृति शुभित छे एते ऐनी प्रभु प्रत्येनी अविचल अद्वा-स्कृतिना ज कारणे, ए पाण्य सहीओना धृतिहास पडयो छे.

लैनधर्मना साहित्यनु जेषु सारी रीते मनन क्युं होय ते निःसंकाय कडी शक्षे के लैन साहित्यमां भूर्तिपूजनी प्रथा प्राचीन काणथी हुती. प्रथम तीर्थ्यकृ श्रीऋषभदेवना शासन काणमां प्रथम चक्रवर्ती भरत महाराजाए पृथ्वेला भावित अने भरवेली भूर्तिओ संघधे उद्देश्यो मणी आवे छे. एयलुं ज नहि, जैन आगमेमां पशु स्थगे स्थगे चैहय, पडिमा तेमज शाश्वती अने अशाश्वती प्रतिमाओनी रिथ्ति डेवलोकना विमानेमां सहाकाण होवाना उद्देश्यो छे. आजनो धृतिहास पशु एता वीरो रुद्धो छे के लगवान महावीरना समयमां लैनधर्ममां भूर्तिपूज विधमान हुती.

लैन साहित्यमां अतावेला नामाहि चार निक्षेपेनुं सूक्ष्म अध्ययन करतां ए स्वतः सिद्ध थिए शक्षे के, लैनधर्ममां भूर्तिपूजननुं स्थान अद्वितीय छे. एयलुं ज नहि अमणु संस्कृतिनु ए भडकतनु अंग छे. लैन शास्त्रोनुं सूक्ष्म अध्ययन कर्या पशु डेवलाये साधु ओये भूर्तिने माननार पक्षनो आश्रय दीयो छे ऐनां उदाहरणो क्यां आएँ छे ?

भूर्तिपूजनी सांसारिक ज्यवनमां पशु अज्ञि लावनानी वृद्धि थां शिव्य, संगीत अने साहित्यने सारुं ग्रैत्साहन मल्हुं छे एते निर्विवाद छे.

सुरेश दीक्षिते साच्युं संलग्नावुं छे के—“भूर्तिपूजना ऐणामां शिवकणा सच्यवाहि छे. भूर्ति अने भावितिनी विविध रथनाओमां आपणा राष्ट्र अने धर्मनी विविध रेखाओ परी छे, पुराणोनी असंभ्य इत्यनाओने पञ्चरूपे साकार करवानी प्रतिष्ठा भूर्तिओ अने भावितिने ज वरे छे. भूर्तिओ प्रजननी मनोलावना, आशा, निराशा अने इत्यनाइपे छे. संस्कारेनुं ए नवनीत छे.”

भूर्तिवाहमां नहि माननारा भाईओने अमे पूजीए छीए के, तमारी संस्कृतिनो धृतिहास शो ? ए क्यांची शइ थयो अने संस्कृतिना वारसहारोने ग्रेवणा पमाउ ऐनी पूर्णकालीन गौरव-गाथानां प्रमाणो आपी शक्य एवुं तमारी पासे शुं साधन छे ?

ज्यारे भूर्तिवाहनी परंपरानां प्रमाणो तो पुरातत्पवेताओने पशु शोधी अतावां छे, तेमानां डेवलांक आ छे :

૮]

## શ્રી. જૈન સત્ય પ્રકાશ

[ વંદે : ૨૦

૧. ડૉ. વિન્સેટ રમીથ 'મધુરા એન્ટીકોલીડ' માં જણાવે છે કે— 'ભગવાન મહાતીરના પુરોગામી ભગવાન પાર્વતીનાથના સમયમાં જે સ્તુપની મજા રચના ઈરોથી કરવામાં આવી હતી તે ઈ. સ. પૂર્વે ૬૦૦ના પછીનો તો નથી જ એટલે કે ઈ. સ. પૂર્વ જીવી શતાબ્દી પહેલાને આ સ્તુપ છે. ( રામગિરિના જૈન સ્તુપ પણ ધર્મા પ્રાચીન છે. )

૨. ઓરિસામાં ઉદ્ઘાટિનિ ગુણાંભામાંથી મહારાજન ખારવેલનો જે શિલાલેખ મળ્યા આવ્યો છે તેમાં ઉદ્ઘાટ છે કે નંદ મહારાજ જે કલિંગ જિનમૂર્તિને લઈ ગયા તે ખારવેલ મહારાજને પાણી મેળવી, જે ઈ. સ. પૂર્વે ૪૦૦ વર્ષ પહેલાંની મનાય.

૩. લોહાણીપુરથી મળ્યા આવેકી જૈન મૂર્તિની જે ઈ. સ. પૂર્વ ૩૦૦-૩૫૦ના અરસાની દાખ પરણા મુદ્દિયમાં છે, તે વિશે ડૉ. કાર્યપ્રસાહ જનયસવાલનો લેખ 'બિહાર ઓરિસા રિસર્વ'ના પ્રગત થયો છે.

૪. મધુરાની ડુષાણકાલીન લેખવાળા મૂર્તિઓ.

૫. આ ઉપરાંત સૌથી પ્રાચીન પ્રમાણુ મોહન-જો-હારેની સામગ્રીમાંથી મળ્યા આવ્યું છે, જે સામગ્રી ઈ. સ. પૂર્વ સવા પાંચ હજાર વર્ષની પુરાણી મનાય છે. એ સામગ્રીમાંથી જૈન મૂર્તિઓ મળ્યા આવ્યાનાં પ્રમાણે પુરાતન્વવિદોએ પ્રગત કર્યાં છે: હિંદ્યા 'વિશ્વભારતી' ના પૃષ્ઠ: ૪૬૪માં જે વિગત પ્રગત થઈ છે તેનું શબ્દદાશ: ભાષાનાર ચા પ્રમાણે છે:

"મોહન-જો-હારેની મળ્યા આવેકી સામગ્રીમાં કર્યોત્સર્ગસ્થ આસનવાળા મૂર્તિ મળ્યા આવી છે, જેની કંઈક સરખામણી ભગવાન 'જિન' સાથે કરી શકાય."

આ ઐતિહાસિક પ્રમાણે જૈનોની શાસ્ત્રીય પરંપરા તરફ આપણું ધ્યાન એંચી રહી છે.

આમ પુરાતન્વવેતાઓએ જૈનધર્મની પ્રાચીનતાનો જે પતો મેળગ્યો છે તેનું એક અગત્યનું સાધન જૈન મંહિરો અને મૂર્તિઓને પણ આભારી છે. એ મંહિર અને મૂર્તિઓના લેખાથી મંહિરના નિર્માણ, પ્રતીકા કરનાર પૂર્વ આચારોં વગેરેનો સમય, વંશપરંપરા અને તત્કાલીન ધ્રતિહાસનો એથી સુગમતાથી થયો છે અને થાય છે.

સ્થાનકવારી સાધુઓની જૈનધર્મની પ્રાચીનતા ચિક્ક કરવા સારુ એ મૂર્તિલેખાના પ્રમાણે તો યાંક છે પણ એના પ્રધાન ઉદ્દેશને અવગણે છે એ જેતાં ભારે આશ્રમ થાય છે. (જુઓ આદર્શ ગુજિ-લેખક : શ્રી. ધ્યારેય-દાસ મહારાજ.)

આ ઉપરાંત ક્રટલાંક જિનેશ્વરની મૂર્તિનો વિરોધ તો કરે જતાં મિંઝાતા હેત-હેવાઓની ઉપાસના કરતા જેવામાં આવ્યા છે. મતલભ કે, મૂર્તિપૂજનના વિરોધીઓ પણ એક ચા બીજી રીતે મૂર્તિવાદી અદ્ધર રહી શકત્યા નથી.

અણી તાજેતરના એક અનુભવની વાત નોંધવી યોગ્ય ગણાશે: એક તેરાણથી સાધુને હમણું જ મળવાનું થયેલું. તેમણે પોતાના ધાર્મિક ઉદ્દેશને સમજાવવા કેટલાંક પોતાના હાથે દોરેદાં કાલ્પનિક ચિત્રો બતાજાં; ત્યારે અમને થયું કે સિદ્ધતા સમજાવવા માટે ચિત્રોનું અવલંબન લેવું તો પડે જ છે. એ માટે આવક પાસે ખર્ચ પણ કરાવું પડે છે. એ જ રીતે જે ઉપહેશના પ્રચાર માટે આતી પુસ્તકાઓનું પ્રકાશન કરવું પડે તે એક ચા બીજી રીતે પ્રતીક-પ્રગત નથી તો બીજું શું છે? આપર અક્ષર એ તાતનાં પ્રતીક જ છે ને?

એક અંથના રચયિતા સ્થાનકવારી સંપ્રાયના એક વિદ્ધાન સાધુઓ એમના અંથમાં પોતાના ઝોડનો જ્યોતિક અધારવેલો અને જેની નીચે મને સમરણ છે ત્યા સુધી એમ જણાવેલું

अंक : १ ]

## 'प्रेमवाणी' पुस्तिकाने जवाब

[ ६

उ—‘आ होया गुरुपूजन माटे नथी, परिचय माटे छे.’

इहेवानी भाग्ये ज जडत छे उ, परिचय आभरे प्रशंसा अने पूजनमां ज परिषुमे छे. गमे ते हो, ए स्पष्ट छे उ, भूर्तिना अवलंबन विना तेना विशेषितोने पण चाल्यु नथी. पछी जिनेश्वरनी भूर्तिनो उ मंहिरनो विशेष करवाई थुं? इहेवाती गुणपूजन गुणीना अवलंबनमां-पूजनमां पर्यवसान पामे छे ए विशे भाग्ये ज जांडा जीतरवानु रहे.

जैनधर्मग्रे डाई पण उपासक मंहिरमां श्रीजिनेश्वर लगवानती भूर्ति आगण लगवानता गुणेनुं रमरण अने ते दारा पोतामां ए गुणेनुं आकृतन करवाना हेतुथी ज जय छे. डाई पण ऐहिक सुखसिद्धि माटे ज्ञातो नथी. अनेहो हेतु होय तो इण्ठो ये नथी.

गुणेनुं रमरण गुणीना अवलंबन विना थर्दा शक्तु नथी. गुणेनुं रमरण करवा साथे ज गुणीना आकृतनी कृपना थाय ए सहज छे. ए ज कृपनाने पृथर हे धातुनी भूर्तिमां आपणे सगुण अवस्था कृपीने गुणेनुं रमरण करीए छीए.

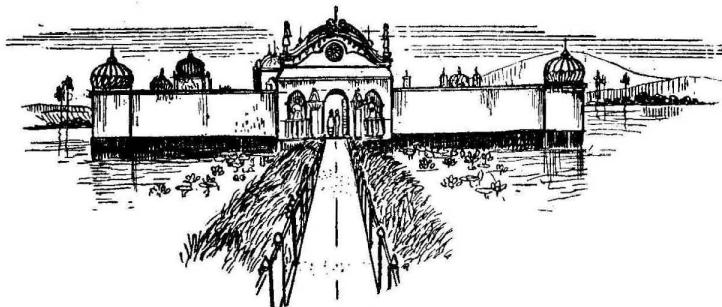
**वस्तुतः** मंहिरे अने भूतिओ वगेरे जनतामां धार्मिकना प्रवाहित राखवानां अमूलां आधनो छे. डेमेड सामूहिक धर्माभक्ति हमेशां प्रतीकनी शोध तरइ वगे छे अने तेथी इण्ठामय भूर्ति अने शिष्यवाणां मंहिरेनुं निर्माण थाय छे. ए माटे उत्तम वस्तुओ दारा विशाण मंहिरे अधाववा अने भक्ति तेमज ध्यान माटे उत्तम वातावरण सर्ववा आपणो. त्याग प्रेरणा नेण्वे छे. ए ज करणु छे उ विमणशाल, कुमारपाल, वस्तुपाल-तेजपाल, जगदुशाल, द्यावदास वगेरेहो लाभेना अर्थे मंहिरे अधावां हां. ए मंहिरे अने भूतिओ ज्ञेत्रे डेनुं मन ग्रसन नथी थतुं?

अमेनो त्याग पण मंहिरे पूरतो ज नहेतो, तेमणे अनेक प्रकारे परोपकारनां कार्ये पण इर्थी हातां. वस्तुपाल अने तेजपाले युद्धी युद्धी दानशाणो अने जगदुशाहे तो लाभो भानवीओने अने पूरुं पारीने हुक्काना लयंकर पंजनमाथी छोडाव्या हता ए कचां अजनायुं छे? आजे पण ज्यारे ज्यारे त्यां धरतीकपो थथा, रेलो आवी अने हुक्को पडवा लां आ ज लैनोए पोताथी अननी महाद दारा त्यागनी ग्रामीन परंपरा नाणी राखी छे एमे ग्रामाणिकपणे कडी शकाय अमे छे.

रेशनीगना जमानामां पण गुणेतहान दारा लैनोए पोताना साधमी अंधुओने महहो पहेंचाडी छे. आजे पण ए त्यागनी ग्रामालि जराये चूक्को नथी. भतवल्य उ, लैनोए होसरै अने भूतिओना निर्माणेनी साथीसाथ मानवत्या-ज्यवद्या अर्थे जराये हुक्क्ख राख्यु नथी.

छेवटे ज्यावपुं उचित थशे उ—अमारा आ जवायमां भूतिश्रीने भूर्तिपूजन तरइ वाणवानो जराये प्रथलन नथी. भूर्तिने भानवी उ भानवी ए एक व्यक्तिगत प्रथ छे. अमारे उद्देश तो भात्र—सौराष्ट्र अने भाजे रथणे वेतांभर लैन समाज जे रीते परस्पर एकदीन अनी रखो छे, एवा विवाहने भूर्तीने—लगवान मधावीरना एक भक्तइपे अनेभक्ते भेणवी रखो छे त्यां आवा विद्रोही प्रवारथी परस्पर वैमनस्य वधवानो भय छे ते न थवो ज्ञेत्रे ए छे.

अमे छम्हीए छीए उ मुनिश्री शास्त्रोनुं सहम अवगाहन करे अने आवा वाहने एकातिक भानवी प्रवारनी धूतमां न रहे; एथी तो आपणा ज पगमां कुहाडो भारवा जेवुं थशे.



## निर्वाण

लेखक : श्रीयुत 'ज्योतिषम्'

**पूर्वापुरीना** पवित्र दुःगंगा आज डोली बिठ्ठा हुता. प्रत्येक धरने उंभरे शोड़नी छाचा पथराई गई हुती. आकाशन्तु, आसो मासनी अमासन्तु हैयुं निर्मण तारकवृद्धी शाणुगाराई गयुं हुतुं. राजभागना राजकासारोना जगमां कमण स्थित-प्रज्ञनी क्लेम अडां हुतां.

ज्ञानीओ कहेता हुताः ‘आनंदो ! आज प्रभु महावीर सुक्षितने वरशे.’

प्रज्ञनो निश्चास नाभता हुताः ‘हाय दे ! प्रभुनी यानी हेहछणी आ अलाभी आंगोथी अणुगी थशे. अहिंसानी महान्त्येति आने न्यूतमांथी सूक्षममां अहस्य थशे !’

ब्रह्मज्ञनो पोडार करता इरता हुताः ‘दे, प्रेमण्सरीनी अमृतवाणी हवे क्यारे क्वरी सांलगवा भण्ये ? वाणी तेकेवी ? राय-रंक, विषुध-अषुध, ज्ञानी-अज्ञानी, माणुस-पशु सहु समने एवी ! मानवतानो अनाहत नाह हवे क्यारे सांलगशु ?’

शिष्यगण मनमां ने मनमां ऐह यामी रह्यो: ‘प्रभु महावीर आज अमाराथी अद्वा थशे. एमने तो सुक्षितनी आडे रहेली हेहनी हीवाल फूर थशे, पशु अमारुं शुं ? ज्ञानी पुरुषोना वचनथी शोक अने आनंदने ज्ञमान लेखवानी भडेनत कीओ; पशु आनंदने स्थगे शोक आवीने पहेलो घेसी गयो छे; केमे कर्यो हठावयो हठतो नथी !’

देवो ने ऋषिओ भीढ़ शांख अनलवी रह्या छे, ने गार्द रह्या छे:

‘वैशालीना राजकुमारे लौकिक सिंहासन छांडी यारलौकिक सिंहासन सर कर्युं ! क्षत्रियकुंडना क्षत्रिये क्षत्रियत्व छांडी अक्षत्र्व प्राप्त कर्युं ! शिकारी धतुर्धर क्षत्रिये, निर्द्विष मृगलांनो शिकार मूझी, काम कोध, लोबने जउमूलथी संहारी नाख्यां.

‘ओ राजमहेलना वासी, अहिंसा ने प्रेमे तने वन वन साधना माटे रभडावयो. तारो राजमहेलनो त्याग एवो आकर्षक नीवडयो दे अनेक राजमहेलना

અંક : ૧ ]

નિર્વાણ

[ ૧૧

વાસીઓ સર્વસ્વત્ત ત્યાગી તારે પંથે વળ્યા ! લોકો લોગને બદલે લ્યાગને મહત્વ આપવા લાગ્યા !

‘આર્થાવર્ત પર તારી પ્રેમભંસરી બજુ રહી. એ બંસરીમાં આર્થ ગાતમ ને આર્થ સુધર્મા જેવા મહાધ્રાક્ષણે પોતાનું પ્રસ્તુતવ ભૂલ્યા; રાજ શ્રેણિક ને રાજ્યિ પ્રસંગચંદ્ર જેવા ક્ષત્રિયત્વ ભૂલ્યા; શાલિલદ્ર જેવા વૈશ્યત્વ વોસર્યા ને મેતારજ ને હરિષણ જેવા શ્રુત્વ છાંડી શક્યા. ‘આતમા જ આત્માનો ઉદ્ધારક છે’ એ મંત્ર પહેલો એમણે જ આપ્યો ને !’

કુલવધૂએ તો મંગળગીત લલકારી બેઠી:

‘મુક્તિસે જાઈ મિલ્યો રે મોહુન મેરો,  
મુક્તિસે જાઈ મિલ્યો.’

પણ પામર ભક્તગણે પોતાના શુષ્પક મુખ્યથી ને સંતસ હેઠામાંથી આનંદનો એક અવાજ પણ કાઢી શકતા નથી ! જાણે ભગવાન હજુ ગર્ભ કાલે જ તો એમની વચ્ચે આચ્યા છે. બારબાર વર્ષની મૌન-વાડળી જાણે હુમણાં જ વરસી છે. બસો નહીં, સોનહીં, પોણોસા પણ નહીં, હજુ તો માત્ર બોંતેર વર્ષ જ થયાં છે. એટલામાં આ મથામણું શી ! અરે, જીવનુકૃતને વળી મુક્તિં શી ! એ તો જીવતાં જ મુકૃત છે. એમને સંસારનું કંચું પાપ સ્પર્શીં શક્યું છે ! લાઈ, જીવનનો ઉત્સવ હોઈ શકે; મૃત્યુનો મહોત્સવ તો કયા મનથી થાય ? ગમે તેવી અજવાળી હોય પણ રાત તે રાત જ કહેવાય ને ! ગમે તેટલું ઉજાવલ પણ મૃત્યુ તો ખરું જ ને !

દ્વિસોથી સાન્નિધ્ય અને સેવામાં રહેતો રાજરાજેં ઈદ્ર પણ છેક છેલ્દી ઘડીએ હિંમત હારી બેઠો. સાજ તો બધા સજાવ્યા, મૃત્યુ-મહોત્સવની બધી ય રચના કરી; પણ છેલ્દી પળે પ્રબુના અભાવની ડફના એને પણ પીડા કરી બેઠો. અરે ! રાજપાટ જેના સેવા-સંપર્ક વિના બોલદ્ય લાગતાં, એ મંગળમૂર્તિ આમ ચાલી જશે તો કોને આધારે, કોના ઉત્સાહવચને આ રાજધુરા એંચાશે ? આધિલૌતિક ઉપાધિઓના સૂક્ષ્મ રણુમાં આત્માની સ્નેહથંસી વિના શે જિવાશે ?

એકત્ર થયેલાં અનેક નર-નારીઓની વતી ઈદ્રરાજે પ્રબુને પ્રશ્ન કર્યો: ‘ફેદેવ, આપનાં ગર્ભ, જન્મ, દીક્ષા અને શાન હસ્તોત્તર નક્ષત્રમાં હતાં ને !’

ભગવાન મહાવીરે જવાણમાં કેવળ હકારદર્શક માથું હલાંયું.

એ નક્ષત્રમાં ભસ્તુ શહ સંક્ષાન્ત થાય છે. અનિષ્ટ ભાવિની એ આગાહી કહેવાય ને ?

ભગવાન મહાવીરે પૂર્વવતુ હકાર ભણ્યો.

‘આપ તો સમર્થ છો, સર્વજ્ઞ છો, સર્વશક્તિમાન છો. મૃત્યુની પળને થોડી લંખાની ન શકાય ?’ ઈદ્રના મનમાં ઊંડે ઊંડે પરછા હતી કે એકતાર મૃત્યુકળને

१२ ]

श्री. जैन सत्य प्रकाश

[ वर्ष : २०

आगण धडेलवामां आवे तो पछी वणी नेहु क्वेवाये. अणीनो चूकचो सो वर्ष ज्ञवे.

लगवान महावीरे भीठा शण्डोभां कहुः ‘राजन्! मोह विवेकने भारे छे; भाटे एने अंध कह्या छे. भारा नन्धर हेह प्रत्येनो तमारो मोह आजे तमने आ ज्ञातावी रह्यो छे. निकट रह्या छो, ज्ञानी थया छो छतां भाषेहुँ भूदी गया के आयुष्यना एक क्षण पछु सुर, असुर के मानव-कोई वधारी शक्तुं नथी? नाटक तो निश्चित बांधेलो सभयमर्यादाभां लज्जावाय ने पूरुं थाय एमां ज शोका! अन्तहीन नाटक रुचे खरुं? तमेतो संसार छुती देनार योद्धा छो: छतां मोह पासे हुए वारंवार पीछेहुठ करो छो. मोहने जुतवो मुखेल छे. शुं तमे ज नंडाता केशीता के शीता हेमांत ऋतुभां जिनां वर्षो लदे उपयोगी होय, सुखकर होय, पछु वसंत आवे-अीषम प्रगटे एट्टो ए तो इंक्वा योग्य ज! रंकना हाथभां पात्र त्यां सुधी ज शोके, ज्यां सुधी एने लिक्षानी जडर छे. रंक भीने ए राज थाय, पछी पछु ए पात्र लक्ष ने झरे तो? हेहतुं काम, जन्मतुं कारणु ने मृत्युनी गरज-सरी गर्छ, आयुष्यनी एक क्षण अने क्षणुनो एक क्षण पछु हवे जोजलृप छे. धृदराज! जुआ, पछु वसंत—कही न करभाती अमर वसंत—भीती रही छे. सत्, चित् ने आनंदनो कही न आथमती उषा जिणी रही छे? स्वागत भाटे सज्ज हो!

धृदराज शरमाई गया, पगमां पडया.

ऐकत्रित मेहनीभां प्रबु वीरना निकटना सेवको पछु हुता. तेघाए तूटी धीरज्जवाणा लक्तज्जनोने ऐकडा करीने आधासन आपवा भांडयुः. कोई आनंगी वात तेआ जाणुता होय तेम क्लेवा लाग्याः ‘लदे लगवान गमे ते क्षेत्र, पछु हालभां निर्वाणु नहि स्तीकारे, ते ऐक ने ऐक ए जेवी वात छे. अंतेवासी छीए एट्टो अंहरनी वात अमे जाणीए छीए. अमने अराखर याह छे, के लगवाने पोताना प्रिय शिष्य महर्षि गौतमने ऐकवार कहुं हतुं, के आपणे अंने ऐक साथे ऐक हिवसे सिद्ध (ऐकने केवलज्ञान-ऐकने सिद्धिपद) थरुं. आजे तेमणे ज महर्षि गौतमने धर्मओध हेवा भीजे गाम भोक्त्या छे. जग-भीननी प्रीत छे. जेमना विना ऐक क्षणु पछु जुवी शक्ते नहीः. ऐना गौतमस्वामीना आव्या वगर लगवान कंधे हेह छोडी होये? शान्ति धारणु करो! आ तो मोदानी लीला छे!’

वात भिदकुल साची हुती. महासमर्थ धन्दलूति गौतमने लगवान महावीरे वयन आध्यानी वात जाणीती हुती. आथी आआ सुहायमां आसायेशनी लागणी प्रसरी रही. पछु लगवान तो अंतिम कियामां भग्न हुता. पर्यंकासने अिराज्या हुता.

आयुष्यनी शीरीमांथी छेल्ला क्षण अरता हुता, ने ए पछु हवे पूर्ण थवानी

અંક : ૧ ]

## નિર્વાણ

[ ૧૩

તૈયારીમાં હતા. હુવિધામાં પડેલો જનસમૂહ સહસ્ર સૂર્યની કળાથી તપતી એમની મુખમુદ્રા સામે નીરણી રહ્યો હતો. સહુના થાસ ઊંચા હતા, સહુના મોં પર એશિયાળાપણું હતું.

પ્રભુએ છેલ્લો સૂક્ષ્મ કાયચોગ પણ રૂંધ્યો ને આંખોને આંણું ફેનારું તેજવર્તુલ પ્રગટ થયું. તારાગણ્યાથી વિભૂષિત આંસો મહિનાની અમાવાસ્યાની રત્નિ એકાએક અલોકિક પ્રકાશથી જગહળી ઊઠી. ચારે તરફથી જ્યનાદ સંભળાયા.

‘પ્રભુ નિર્વાણ પાઢ્યા !’

હવામાં શાંખ કૂંઠાયા. વનમાં હુંહુલિ વાગ્યાં.

સંસારને જગહળાવી રહેલો મહાતીપક અંતરચક્ષુઓને ઉજવળ કરી ચર્મ ચક્ષુઓની સામેથી બુગાઈ ગયો. મોહુની દારણું પળો પર ઈદરાજ વિજય મેળવી હવે સ્વસ્થ થતા હતા ને કહેતા હતા:

‘દીપક પેટાવો ! દીપાવલિ રચ્યા ! પ્રભુ નિર્વાણ પાઢ્યા !’

અમાવાસ્યાની એ રાત અનેક દીપકોથી જગહળી ઊઠી. પણ કેટલાક શાંકિતોનાં હૃદય પેલા મોટી મોટી વાતો કરી આશાસન આપનાર અંતેવાસી પાસેથી શુરુ ગૌતમને આપેલા વચનની હૃડીકતનો જવાબ માગવા ઉત્સુક હતા.

પ્રભુનો નિર્વાણ-ઉત્સવ રચાઈ રહ્યો હતો; શાંખ, મૂઢંગ ને પણવથી આકાશ ગુંજ રહ્યું હતું. અંધારી રાત ઉજમાળી બની ગઈ!

( ૨ )



ધીજા દિવસનું પ્રભાત હજુ ધીદ્યું નહેતું, ત્યાં સમાચાર આવ્યા કે ગુરુ ગૌતમને પ્રભુ મહાવીરના મૃત્યુની જાણ થઈ ગઈ છે. એમનું રૂદ્ધ વજા-હૈયાને પણ લેહે તેવું છે. એમના રૂદ્ધના શોકલારથી પૃથ્વી પણ લીંબાઈ ગઈ છે. લતાઓ પરથી કૂદા કરમાઈ ને પૃથ્વી પર જરી રહ્યાં છે, ને કમળયેલ મુરાબાઈ રહી છે. આખું વાતાવરણ શોકલ છે.

એ મહાજાની પ્રાદ્યાણુનો આત્મા બાળકની જેમ વ્યાકુલ બની ગયો છે. સમાચાર લાવનારાઓએ કંધું કે અમારાથી એ જેઠી ન શકાયું, એટલે એમે

[ १४ ]

श्री. नैन सत्य प्रकाश

[ वर्ष : २०

त्यांथी चात्या आयो.

साची वात छे.

शुरु गौतम आकाश सामे गर्जना करी पडवा पाडे छे: ‘प्रभु ! एवां ते क्यां मारां महापाप हुतां कै ज्ञवनभर साथे राखीने अंतकापे अगजोः कर्यो ? शुं तमारां वयन मिथ्या हुतां ! अदै, मिथ्या कैम करीने मानी शकुं ? पछी आम कैम ?’ आ तो ज्ञानीनु रुहन !

अदै, आवा करुण स्वरलार तो संसारमां केार्धना जेया नथी. मानवीनां धर्मकुतां हैयां थांकी जाय एवा ए श्रोकस्वर !

संसारनो केार्ध आप, केार्ध भा, केार्ध पतिव्रता, केार्ध पुत्र, केार्ध घडेन आवुं कही रही नहि होय ! योऽगीनां आवां अमूलधर्म आंसु संसारे जन्म धारी कही जेयां नहि होय !

आभी मेहनी नवी येहना अनुभवी रही. ईद्रराज विचारी रह्या के अज्ञानीने समजवावे सहेल छे, पण आ ज्ञानीनो श्रोकस्वर कैम हुणवे करी शकाय ? समज्ञुने शी रीते समजवाशे ? भत्स्यने तरवानुं कैम शिखवाशे ? सहु अजय मूळवण्ण अनुभवी रह्यां.

पग्ले पग्ले, पणे पणे शुरु गौतम सभीप आवी रह्या हुता. पावापुरीना सुन्दर पार्वतीय ग्रहेश पर गोपनीयोना बांसी बलु जीरी के महागुरु धीर, स्वस्थ पग्ले आवता हेखाया.

पण आ शुं ? आशातीत दृश्य ! विलापने बह्ले, रुहनने बह्ले, महाशुरना सुख पर अपूर्व शान्ति ने अलौकिक तेज रमतां हुतां. तेमां नेत्रोमां प्राप्तसिद्धिनो. नवीन आनंद लर्यो हुतो !

अदै, महाशुर तो हुसे छे ! शुं महादुःखमाथी प्रगट थतुं गांडपण्ण तो एमने लाईयुं नथी ने ! आभी मेहनी उत्सुकतामां सभीप आवी.

‘प्रभु गया !’ ईद्रराजे बोलवानी हिंमत करी.

‘हा, ए गया ने आपणे तरी गया. ईद्रराज, हाड्यामनी मोहमायानी दीवालो लेहार्ध गर्ध. जे ज्ञवनथी न प्राप्त थयुं ते महाप्रभुना निर्वाणु मारा निर्वाणुना पथने निश्चित कर्यो. मारी सिद्धिनां द्वार झूझी गयां.

‘शुं आपने महाज्ञान-केवलज्ञान जिपलयु ?’

‘हा.’

‘कैम करीने ?’

અંક : ૧ ]

નિર્વાણ

[ ૧૫

‘ઇદ્રાજ, સાંભળવું હોય તો સાંભળી લો ! ભગવાનનો હું એકાંત રાગી ભક્ત હતો; અને એ એકાંત રાગ મારી પ્રગતિને હાનિકરક નીવડચો હતો. આત્મિક પૂજને બદ્દલે મેં વ્યક્તિપૂજન આદરી હતી. શુણુને બદ્દલે એમના દેહનો હું પૂજારી અન્યો હતો; ભાવને બદ્દલે દ્રવ્યનો પૂજારી અન્યો હતો, ને છતાં હું તો માનતો કે મેં તો ભાવપૂજ જ આદરી છે. પ્રભુનો વિરહ મારે મારે અસદ્ય હતો. એ અસદ્યતા જ મારી અશક્તિ હતી. એ કારણે અનેક નાના નવદીક્ષિત સાધુએ અટાઈ સાધ્યને વરી ગયા ને હું એવો ને એવો મેડો રહ્યો. ભગવાન ધણીવાર કહેતાઃ

‘ગૌતમ, મોહ અને ભ્રાન્તિનું સામાન્ય સર્વત્ર પ્રસરેલું છે. તને કથાં ખખર છે કે રાગ એવી ચોજ છે, કે જે સહસ્ર શતાબ્દીએના સ્વાધ્યાય-સંયમને તપ-તિતક્ષણને નિર્માણ બનાવી નાખે છે. સાગરના સાગર એણાંગી નાખનાર સમર્થ આત્માને ખખર નથી હોતી કે કેટલીકવાર કિનારા પસે જ એનું વહાણું દૂઘે છે. સૂરજ છાણડે ઠંકયો એવી કહેવત કેટલીક વાર જ્ઞાનીએ જ સાચી પાડે છે. ગૌતમ, ઇસીથી કહું છું, હાડચામની દીવાદો લેતી નાખ ! ક્ષણુભંગુર દેહને નજરથી અગ્રો કર ! બાદ તરફથી દાષ્ટ વાળી આંતર તરફ જ ! ત્યાં ગૌતમ પણ નથી, મહાતીર પણ નથી, શુરૂ પણ નથી કે શિષ્ય પણ નથી ! સર્વને સમાન બનાવનારી પરમ જ્યોતિ ત્યાં વિકાસી રહી છે.’

શુરૂ ગૌતમ આટલું કહીને થંદ્યા. અંતરમાં આનંદનો મહાસાગર ભરતીએ ચઢ્યો હોય, તેવી તેમની મુખમુદ્રા જ છે ને ! થોડી વારે શુરૂ ગૌતમ બોલ્યાઃ

‘પણ ભક્તાજનો, હું માનતો કે પ્રભુ આ બધું ણીજા કોઈને લક્ષીને કહે છે. સંસારમાં ગૌતમે તો આસક્તિમાત્ર છોડી છે ! પણ અંતરને બિજું ખૂબું એક આસક્તિ હતી, પ્રભુના દેહ પરના મમત્વની દેહ તો ક્ષણુભંગુર છે ચિરંજિવ તો માત્ર આત્મા છે; એ હું જાણું હતો. ક્ષણુભંગરની ઉપાસના ન હોય. એમ હું સહુને કહેતો હતો. પણ હું જ ભૂલ્યો ! ચતુર પડ્યો ચતુરાઈની ખાડમાં ! છેલ્દી પણ મને અગ્રો કરી પ્રભુએ મારી ભ્રમણું, મારે મોહ હર કરી ‘પોતાનું’ વચન પાપણું. પ્રભુનું મુત્યુ તો મરી ગણું હતું—મારું પણ મુત્યુ હવે મરી ગણું. આજ હું કૃતકૃત્ય થયો.

‘પ્રભુએ નિર્વાણ પામી સંસારને સહાને મારે અખંડ પ્રકાશ, ન બુઝાય તેવી જ્યોતિ, માણુસ ભૂલો ન પડે તેવો ધર્મ બતાવ્યો છે.

‘જ્ય હો મહાપ્રભુનો !’

મેહની શુરુના પાયને વંદી રહી,



## भोजपुरका जैन मन्दिर

लेखक : पूज्य मुनिराज श्रीकान्तिसागरजी, ग्वालियर

**आर्योंका** प्रकृतिप्रेम विख्यात रहा है। उसके द्वारा सौंदर्यनुभूतिजनित आनन्दसे मानव उत्प्रेरित होता आया है। कलाका जन्म भौतिक आवश्यकताओंमें होता है। रसज्ञ उसे आत्मस्थ सौंदर्यका उद्बोधक मानता है। बाह्य प्रेरणाप्रद निमित्तसे अन्तरंगके अमूर्त भावोंको अनुलग्नीय बल मिलता है। भारतीय कलाके पीछे एक निश्चित प्रेरणाशील और ऊर्जस्वल विचारकी सुदृढ़ परम्परा सन्निहित है। मानवकी सामूहिक वृत्ति धर्ममें केन्द्रित होनेके कारण, कलाका विकास धर्मके द्वारा ही हुआ है। मन्दिर, गुफाएं, प्रतिमाएं आदि भावमूलक शिल्प-कृतियाँ उसीकी परिणति हैं। जब संस्कृति, कलाके द्वारा प्रकृतिकी मनोरम गोदमें अपनी अपनी अस्मिताको मूर्त करती है तब उसके सौंदर्य प्रदर्शनकी क्षमता तो वृद्धिंगत होती ही है, साथ ही उसका सुकुमार भावप्रेरक आनन्द भी हिंगुणित होकर अर्तान्द्रिय सिद्ध हो जाता है। वास्तवमें साधक अपनी चिर साधना नीरव स्थानमें ही कर, साथ्य तक पहुंच सकता है।

प्रकृति उसके लिये महती प्रेरणाकी स्रोतस्थिनी है। वह सात्त्विक वृत्तियोंकी ओर सूक्ष्म संकेत भी करती है। ऐसे नैसर्गिक स्थानोंमें व्यक्ति सांसारिक वृत्तिको विस्मृत कर अन्तर्मुखी चित्तवृत्तिमें तन्मय हो जाती है जो जीवनका चरमोक्तर्ष है। वाणीका गंभीर मौन साधककी अन्तर्शेतनाको जाग्रत कर, स्फूर्तिप्रद व आत्मवलवर्द्धक शक्तियोंका सूत्रपात करता है। वही मानवताकी सुदृढ़ आधार शिला है। भारतीय अध्यात्मवादकी उत्थेरक भावना प्रारंभ कालसे ही समाजमूलक रही है।

सीमित आवश्यकताओंमें जिन दिनों सांसारिक वृत्ति व्याप्त थी, उन दिनों सापेक्षतः जीवन शान्तिमय था किन्तु केवल आवश्यकताओंको ही साथ्य मान कर जबसे मनुष्यने जीवनदान प्रारंभ किया है तबसे आन्तरिक शान्तिका लोप ही नहीं अपितु आध्यात्मिक प्रेरणाके स्थानसे भी च्युत हुए जा रहा है। वैचारिक परम्पराका अनुभवजन्य ज्ञान अन्तर्मानसमें तब ही उदित होता है जब कभी प्राचीन खंडहर या गिरिकिंदराओंमें विसर्गी हुई या ध्वस्त कलात्मक संस्कृतिके बीच रुढ़े होते हैं। वहां विगत वंदनीय विभूतियोंका मथुर स्मरण होता है। मेरे मुनिजीवनमें ऐसी अनेक घटनाएं घटी हैं जिनसे हृदय पर बहुत ही आघात लगा और प्रतीत हुआ कि आजके सर्व साधनसंपन्न युगमें जितना राजनैतिक दासत्व स्वीकार किया उससे हमारी पारम्परिक व चिरपोषित कलात्मक वृत्ति एवं रसज्ञताको निष्कासन मिला। आश्र्य इस बातका है कि जो भावमूलक अंतर्शेतना किसी समय पूर्व पुरुषोंके दैनिक जीवनमें साकार थी वही आज हमारे जीवनसे दिनानुदिन विलुप्त हुई जा रही है, कारण कि हम प्रत्येक वस्तुको

अंक : १ ]

बोज्युरका लैन महिर

[ १७

गंभीरतापूर्वक देखनेका प्रयत्न ही कहां करते हैं ? तभी तो हमारी जैन संस्कृतिके भव्य भालको उज्ज्वल करनेवालें शताधिक प्रतीक अरक्षित—उपेक्षित दशामें पडे हैं, अपना सौंदर्य अरण्यमें विवर कर भूमिसात् हो रहे हैं । सहदय अन्वेषककी ये कब तक प्रतीक्षा करते रहेगे ? मैं इस निवंशमें एक ऐसे ही, शताव्दियोंसे उपेक्षित खंडहरकी कीर्तिगाथा सुनाने जा रहा हूँ ।

**भोजपुरकी ओर-**पुरातत्त्वके प्रति स्वाभाविक आकर्षणके कारण मध्यप्रदेशसे भोपाल आने पर प्राचीनतम खंडहर व शिल्प—भास्तुर्यमूलक कलाकृतियोंकी गवेषणा करनेसे सांचीके उपरान्त भोजपुरका नाम भी कर्णगोचर हुआ और प्रमुख संचालककोसे ज्ञात हुआ कि भोजपुरके अवशेष भोपालके खंडहरोंमें महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं । अतः उनका अन्वेषण नितान्त आवश्यक ही नहीं, अपितु अनिवार्य है । स्थानीय कलाकारोंद्वारा मुझे प्रेरित किया गया कि बिना भोजपुर देखे भोपालके हार्दिको समझा नहीं जा सकता । इसके संबंधमें विभिन्न प्रकारकी किंवदन्तियां सुन चुका था । पर वहांके वनराजोंके प्रकोपसे भी मैं अपरिचित न था । भोपाल सरकारके सुयोग्य प्रधानमंत्री श्री डा० शंकरदयालजी शर्मने मुझे आश्वस्त किया कि मैं भोजपुर अवश्य जाऊँ । उचित सभी प्रकारकी व्यवस्था सरकार करेगी । चारुमास बाद ता. १०-१२-५३ को मैं तरुण बाबू घेवरचन्द्रजीके साथ अतीतकी ज्योतिके दर्शनार्थ पैदल चल पडा ।

**प्रकृतिके प्रांगणमें—**कलाकरका नैसर्गिक निखार प्रकृतिकी सुरम्य आभामें उद्दिष्ट होता है । भोजपुर इसका अपवाद नहीं । भोपालसे ओ वेदुल्लागंजके मार्ग पर मिसरोदसे कुछ आगे चिक्खलोदकी ओर एक शाखा फूटती है जिस पर लगभग ४ मीलसे कुछ अधिक जाने पर पुनः दाहिने हाथकी ओर मुड़ने पर जो कच्चा मार्ग है वही टेढ़ी-मेढ़ी पगड़ियोंसे होता गन्तव्य स्थान पर पहुँचता हुआ गोहरगंजकी ओर जाता है । चिरपेषित मनोकामना लिए उत्साहके साथ हम लोग आगे बढ़े जा रहे थे । मार्गकी निलक्षणता अपरिचित पथिकको लक्ष्यप्रष्ठ करनेवाली वृत्ताकार थी, उन पगड़ियोंको पार करते हुए, बंगरसियासे जो मार्ग जाता है वह यद्यपि विशाल वृक्षोंसे परिवेषित तो नहीं है किन्तु ज्ञाई—झुरमुट इतने अधिक हैं कि दिनको भी एकाकी जानेका साहस संचित करना होगा । बाईं और छोटीसी पहाड़ी और दाहिनी और कलियासोत है जो बेवरतीसे आ मिलता है । कहीं कहीं जनशून्य एकान्त भ्रमित कर सकता है । ज्यों ही आगे बढ़े त्यों ही बाईं ओरकी पहाड़की एक दीवार पर दृष्टि पड़ी । गढ़—गढ़ाए सुगठित प्रस्तर व्यवस्थितरूपसे अवस्थित थे, जो मित्तिका भव्यरूप धारण किये थे । इसकी चौडाई २० फीटसे कम न होगी । महाराजा भोजने इसे कालीयसोतको रोकनेको बनवाया था । एक स्थान पर बांध तोड़नेका असफल प्रयास भी परिलक्षित हुआ । जंगलसे होता हुआ बांध कहीं कहीं मार्गसे इतना सटा है कि दिनको भी हिंस पशुओंका मिल जाना असम्भव नहीं । छोटी सघन ज्ञाड़ियां जंगलसे कहीं अधिक भयप्रद प्रमाणित हो सकती है । और इस मार्गमें कोई व्यावसायिक गांव न पड़नेसे आवा-

१८ ]

श्री. नैन सत्य प्रकाश

[ १५ : २०

गमन भी सीमित है। बांधकी दीवाल भोजपुरके मन्दिर तक चली गई है। इतना विस्तृत, सुदृढ़ और सुन्दर बांध तात्कालिक जानिकि सुविधाओंके प्रति शासनकी जागरूकताका स्मरणीय प्रतीक है। बंगरसिया गांव इसी बांधकी सुदृढ़ दीवाल पर बसा जान पड़ता है। बांधकी व्यापक परिधिको देखते हुए ज्ञात होता है कि उन दिनों जल-स्थगन-कला कैसी उच्च सीमा तक पहुंच चुकी थी? मौर्यकालमें भी अशोक द्वारा सिंचाईके लिये नहरोंकी व्यवस्था थी। मोहन—जो—दारो तथा नालन्दाके खण्डहरोंमें बनी नालियां क्रमशः नगरनिर्माण कलाकी विकासात्मक परम्पराकी और दृग्गित करती है। प्रस्तुत बांधका जितना उन दिनों सांस्कृतिक महत्व था उससे भी कहीं अधिक आज उसका कलात्मक गौरव है। प्रेक्षकको आश्र्य होता है कि वर्षों तक अरक्षित, उपेक्षित रहनेके पश्चात् आज भी ऐसा लगता है कि इसमें कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। कुछ परिवर्तनके साथ भविष्यमें सिंचाईके लिए इसका उपयोग किया जा सकता है। बांधकी दीवालके पांछे घेने वन हैं। यद्यपि कीरतपुरसे एक भील कुछ मेदानका भाग पड़ जानेसे बांध तिरछा हो चला है जो भोजपुरके मन्दिर तक चला गया है। गाड़ीदानके दाहिनी ओर कालियासोत प्रवाहित है। कीरतपुरके समीप आने पर छोटीसी टेकरी पर बना मन्दिर दिखलाई पड़ता है जो किसी समय समर्पणी मालवका पुनित श्रद्धा केन्द्र था। हजारोंकी धार्मिक भावना तो आज भी इसके साथ जुड़ी हुई है। निःसन्देह आध्यात्मिक साधना और लोकचेतनाको उद्दीपित करनेवाला यह ध्वस्त कलामन्दिर सहृदय प्रेक्षक और कलाकारको स्पंदित करता है। पर्थगोंकी जाज्वल्यमान कलात्मक परम्परा सचमुच दूरसे ही जननम उन्नयन कर सौंदर्यमूलक दृष्टि प्रदान करती है। दूरसे ही इस खण्डहरके शिल्पियोंके प्रति श्रद्धा उत्पन्न होती है, वह मन्दिरके निकट जाने पर अविस्मरणीय भावनाके रूपमें परिवर्तित हो जाती है। कीरतपुर ग्राम सचमुच भोजपुरकी उदात्त व उज्ज्वल कीर्तिका प्रतीक जान पड़ता है। निश्छल कीर्तिका प्रकाश श्रद्धालु और बुद्धिजीवियोंको विशिष्ट प्रकारकी प्रेरणा देता है। हरे भेर लहलहाते खेत, पहाड़ी और वनमें अठखेलियां लेती हुई प्रकृति भोजपुरके पार्थिव सौंदर्यको सहज भावसे आत्मसात् करनेको प्रेरित करती है। सहसा वागी मुखरित हो उठती है। प्रकृति और संस्कृतिके समन्वयात्मक संगम पर कलाका यह क्षेत्र मानव साधनाका पुनित धाम है। परिस्थितिजन्य यह निर्माण स्थायी प्रेरणाका एक ऐसा स्रोत है जिसके प्रवाहकी प्रत्येक शाखा ओज, बल और सौन्दर्यसे परिलिपित है। किसी समय सुमधुर धंटानादकी प्रतिवनि प्रकृतिके नीरव क्षेत्रमें गुजरित होती होगी किन्तु आज वहां मानव ध्वनि भी कठिनतासे ही सुनाई पड़ती है।

वेत्रवतीको चीरकर उन लघुतम चट्ठानों पर चढ़ना पड़ता है जिसकी सर्वोच्च शिला पर

१. श्री नन्दलाल डे द्वारा रचित 'एश्यनट ज्योग्राफीकल डिशनरी' में सावरमतीकी एक शाखा वेत्रवती—वात्रक माना है—वृत्रनिधि भी माना है।

अंक : १ ]

जैन भंडिर

[ १६

लाखों व्यक्तियोंका साधना, सौन्दर्य और श्रद्धा स्थान सुनिर्मित है। सचमुच कलाकारोंने इसे खूब चुना है। मीलों तकका भूमाग पहाड़ियोंसे परिवेशित है। शस्यश्यामला खेतकी पृथ्वी किसी समय मानसका उन्नयन करती थी किन्तु आज वह हृदयको अतीतकी उर्जस्वल रेखाओंमें समेट लेती है। भावावेश और ज्ञानवेतनाका संचित पुंज प्रवाहित होने लगता है। प्राकृतिक दृश्य वाणीका मौन सहन नहीं कर सकता। भावनाका झरना कविताके रूपमें फूट पड़ता है। उद्दीपित रसवृत्ति खण्डित पञ्चरोमें चिरसंचित मानवताकी अनुभूति प्राप्त करती है।

**उत्तर भारतका सोमनाथ—**चट्ठान पर चढ़ते ही छोटी मोटी समाधियों पर दृष्टि केन्द्रित होती है, जो विगत महन्तोंकी बताई जाती है। समाधियोंकी परिधि व भव्य जगती (नींवके ऊपरका भाग)को देखकर मन्दिरकी विशालताका आभास होता है। मन्दिरके ऊर्ध्व स्थानमें जानेके दाहिनी ओर सर्ती स्मारक और बाँई ओर कथित समाधियां हैं। जो सीढ़ियां उपर जानेकी हैं वे अर्वाचीन हैं। ऊपर जाने पर दर्शकके हृदय पर कोई विशेष प्रभाव ढाल सके वैसा कुछ भी आकर्षण नहीं है। दोनों ओर अत्यन्त जर्जरित दीवालें और दालानें आधुनिक ढंगकी बना दी गई है, तथा मध्यमें सामान्य दो मन्दिर कतिपय प्राचीन अवशेषोंको लेकर किये हैं। भोजपुरकी पर्याप्त स्थिति सुननेके पश्चात् कल्पनाशील कलाकारके मन पर जैसा प्रथम प्रभाव पड़ना चाहिए, इन अर्वाचीन मन्दिरोंसे नहीं पड़ पाता। ये मन्दिर शंकर मन्दिरके सभामण्डप (प्रांगण)में बने हैं। इनके पृष्ठ भागमें अत्यन्त विशाल कलापूर्ण और भव्य प्रासादके अवशेष हैं। इसकी रचनाशैली, विशालता, सूक्ष्मकोरणी (पचीसकारी) देखकर सहसा मुखसे निकल पड़ता है कि सचमुच वह उत्तरभारतका सोमनाथ है। सोमनाथमें समुद्रका गर्जन गाम्भीर्य है तो भोजपुरमें वेत्रवतीका स्तिंघ माधुर्य है। मध्यभारतका भगवान भूतनाथका भव्य भवन, भारतीय शिल्पभास्त्रर्थ और मूर्तिकलाका उत्तुंग प्रासाद, उत्कृष्ट स्थापत्यका चिरस्मरणीय साधना-निकेतन।

### जैन मन्दिर—

भोजपुरकी वास्तविक प्रसिद्धि प्रस्तुत शैव मन्दिरको लेकर ही है। पर बहुत कम लोग जानते हैं कि यहां जैन मन्दिर भी है। महाकोसल और विद्यप्रदेशमें जिस प्रकार शैव संस्कृतिका प्राधान्य है उसी प्रकार जैन संस्कृतिका भी प्राचुर्य है। तत्सन्निकटवर्ती मालवभूमि भी जैन संस्कृतिकी केन्द्रस्थली रही है। मौर्यकालसे लगा कर आजतक यहां जैनोंका बोलचाला रहा है। भोपाल राज्यके पुरातत्व पर अद्यावधि समुचित प्रकाश नहीं डाला गया है, केवल सांची और उदयगिरि ही प्रसिद्ध स्थानोंमें गिने जाते रहे हैं। पाठकोंको आश्र्य होगा कि पुरातन जैन अवशेष और मूर्तिकलाकी उत्कृष्ट सामग्री भोपालके खंडहरोंमें अवेषकोंकी प्रतीक्षा कर रही है। मध्यकालीन जैन मूर्तिकलाकी ऐसी महत्वपूर्ण कलात्मक संपत्ति इस भू-भागमें

२०]

श्री जैन सत्य प्रकाश

[ वर्ष : २०

विखरी पड़ी है जिसके बिना संशोधनके उसका क्रमिक इतिहास ही अपूर्ण रहेगा—विशेषतः परमार कलाका शिल्प—भास्कर्य जैन अवशेषोंमें ही मिलेगा। मौर्यकालीन पालीश यहांकी विशेषता है जिसे महाराजा भोजने प्रारंभ किया था। अनुभवहीन कलाकार कभी भ्रमित हो जाते हैं कि ये प्रतिमाएं मौर्ययुगकी तो नहीं हैं। भोपाल राज्यमें अमरावट, समसगढ़, इस्लामपुर, भोपालनगर और आशापुरी जैन प्रतिमाओंके साने हुए केन्द्र हैं। हजारों जैन कलाकृतियां सूचित स्थानोंमें विखरी पड़ी हैं। भोपालके मुख्य मस्जिदकी सीढ़ियोंमें एवं अंदर भागमें जैन प्रतिमाएं व अवशेषोंके चिह्न लगे हुए हैं। आर्य सुहस्तिसुरिका यह विहार प्रदेश रहा है। मानतुंगाचार्यका साधनास्थान तो आज भी भोपालके पास ही है।

महाराजा भोजकी परमसहिष्णुता विख्यात है। प्रस्तुत भोजपुरका शैव मंदिर व ऐतिहासिक बांध भोजकी सांस्कृतिक और लोकसेवाकी एसी कृतियां हैं जिन पर समृद्धा राष्ट्र गर्व कर सकता है। जिस समय मंदिरका निर्माण हो रहा होगा उस समय बांध जैनोंकी संख्या पर्याप्त रही जान पड़ती है। सूचित भोजपुरके शैव मंदिरसे एक फल्गुग दूर घनघोर अण्यमें विशाल जैन मंदिरके अवशेष पड़े हैं और मंदिरका जीर्णोद्धाररूप भी दृष्टिगोचर होता है। कहना चाहिए यह मंदिर एक बहुत ही गहरी खोहके किनारे बनाया गया है। यही नवाब साहबकी शिकारगाह है।

जब हम लोग जैन मंदिरकी ओर आगे बढ़ रहे थे ऐसा लग रहा था कि कहींसे बनराज अयान्त्रित रूपसे दर्शन न दे बैठे। क्यों कि जानेका मार्ग तो है ही नहीं। अनुमानसे ही हम लोग बढ़े जा रहे थे। मंदिरके समीप पहुंचने पर अधतूटी जिनप्रतिमाएं दिखलाई पड़ी। स्वस्तिक, नंदावर्त और अन्य जैनसंस्कृति मान्य प्रतीक भी दिखलाई पड़े। आगे बढ़ने पर लता—गुलमोंसे परिवेशित भव्य भवन दृष्टिगोचर हुआ। यही आलोचित जैन मंदिर है। पुरातन अवशेषोंको एकत्र कर किसी श्रद्धाजीवीने ढाँचा लगाकर दिया है। कलाकी हव्या तो इस प्रकार हुई है कि देखते ही दिल रो पड़ता है। कलापूर्ण प्रतिमा और महत्वपूर्ण अवशेषोंको उटपटांग ढंगसे फिट कर दिये हैं। जामितीय रेखावाले स्तंभ उल्टे ही जड़ कर श्रद्धालु मानसने अपनेको कृत—कृत्य माना है। चतुर्दिश् स्थानको सावधानीपूर्वक देखनेसे अवगत होता है कि पहिले यहां पर ही मंदिर था, पर जैन समाजका संसर्ग न रहनेसे और मुस्लिम शासकोंकी आखेटचर्चायीका प्रधान स्थान होनेसे, या समुचित रक्षाके अभावमें धराशायी हो गया। १९५२ संवतमें किसी श्रद्धालुने जीर्णोद्धृत कर पुण्यार्जन किया।

### कायोत्सर्ग प्रतिमा—

मंदिरमें विशाल काय त्रिगडा अवस्थित है। मध्यवर्ती प्रतिमा २० फीटसे अधिक ऊंची है। इससे कुछ कम ऊंची २२ अन्य प्रतिमाएं हैं। कलाकी दृष्टिसे मूर्तियां विशेष महत्वपूर्ण तो नहीं हैं पर हां, परमार मूर्ति—निर्माण कलाके बहुतसे उपकारणोंका व्यवहार

अंक : १ ]

लोकपुरका जैन मंदिर

[ २१

इसमें हुआ है। कलत्रुसियोंका प्रभाव भी पड़ा है जो स्वाभाविक है। मेरे साथ जो सरकारी फोटोग्राफर थे उससे बड़ी कठिनाईसे प्रतिमाका चित्र लिया जा सका—वह भी दो प्लेट्समें। प्रतिमाओंके दोनों ओर सीढ़ी बनी है। बिना सीढ़ीके अभिषेक असंभव है। प्रतिमाओंकी विशालता देखते हुए गर्भगृह पर्याप्त नहीं है। वह शायद ही २२ फीट चौड़ा रहा होगा। पर मंदिरकी विस्तृत परिधि से अवगत होता है और कहा जा सकता है कि किसी समय वह ४ फर्लीगमें फैला रहा होगा। चारों ओर बहुत दूर—दूर तक अवशेष व दीवारोंके चिह्न विद्यमान हैं। प्रतिमा पर १२वीं शताब्दीका लेख है पर वह इतना अस्पष्ट है कि उसका पढ़ा जाना संभव न था कारण कि न तो हमारे पास उस समय इतना अवकाश था न उचित प्रकाश हीका समुचित प्रबन्ध था। दूसरा कारण यह भी था कि गर्भगृह कुछ गहराईको लिए हुए है।

मंदिरके पास ही एक ध्रस्त खंडहरमें मैदूजीका स्थान बना है। जनता, स्वार्थमूलक भावनावश इनका यथोचित सम्मान करती है। यही तो जंगलके देवता भी माने जाते हैं।

### शैव-मंदिरमें जैन प्रतिमा—

शैव मंदिरकी दीवारोंका पुनर्निर्माण भी अवशेषोंसे ही हुआ जान पड़ता है। एक दीवालमें अंबिका—गोमेष यक्षयुक्त भगवान् नेमिनाथीकी प्रतिमा चिपका रखकी है। इस शैव मंदिरके निर्माणमें जैनावशेषोंका खूब उपयोग हुआ है।

### शिल्प-अध्ययनशाला—

कठोर प्रस्तर पर कमनीय भावावलियां तो भोजपुरकी आत्मा ही है किन्तु सबसे बड़ी विशेषता जो वहां विद्यमान है, मेरी विनम्र सम्मतिमें वह अनुपम है। सुन्दरतम शिल्पकृतियोंका निर्माण तो भारतके अन्य प्रान्तोंमें भी हुआ। कलाकारोंने हवोंन्मत्त होकर जनताको रसदारा आनन्दका अनुभव भी कराया किन्तु उन कलाकारोंकी भावज्येतिको उद्दीपित करनेवाली प्रेरणाका प्रकाश कहांसे मिला और उनका खाका कैसा था आदिकी कल्पना ही क्षिष्ट है। भोजपुर इसका अपवाद है। मंदिरके निकट खुले मेदानोंकी चट्ठानों पर कहीं प्रतिमाएं, कहीं स्तंभ-कृतियां, कहीं जामिनीय रेखाएं, आदिके विराट चित्रण-उत्खनन मिलते हैं। ऐसा लगता है कि जैसे बहुतसे शिल्पी इन्हें देखकर अपनी कृतियोंका निर्माण करते रहे होंगे।

भोजपुरके मंदिरोंका कलाकौशल नयनप्रिय है। इसके समर्त अवशेषों पर विस्तृत रूपसे प्रकाश डालनेवाला मैंने एक स्वतंत्र श्रंथ ही, भोपालके चौक कमिश्नर श्रीभगवान सहाय आई. सी. एस. और लोकप्रिय प्रधान मंत्री श्री डा. शंकरदयाल शर्मके आग्रहसे सचित्र तैयार किया है जो शीत्र हीमें भोपाल सरकारकी ओर से प्रकाशित हो रहा है।

अंतमें हृष्मय संवाद देकर निवंध समाप्त करूँगा। मेरे मित्र श्रीकृष्णदेवजी (सुपरिटेंडेंट आफ आर्कियोलोजी)ने मंदिरकी रक्षाका भार अपने ऊपर लेना स्वीकार कर लिया है और भोपाल शासनने पक्का मार्ग बनाना स्वीकार किया है।

# ‘उस्तरलाव’ यंत्र संबंधी

## एक महत्वपूर्ण जैन ग्रन्थ ।

लेखक :— श्रीयुत अगरचंदजी नाहटा

भारतीय मनिषियोंकी उदार भावना विशेषरूपसे उल्लेख्योग्य रही है। इसीसे विदेशी जो कि भारतमें आये थे यहाँके निवासियोंके साथ सुवर्णमिलसे गये। उनके मान्य देवी-देवता रीत-सिवाज और बहुतसी मान्यताओंको भारतियोंने अपनेमें मिला दिया। भारतमें जो पार-स्परिक विरोधीसे विभिन्न आचार और विचार पाये जाते हैं वे इसी देशी और विदेशी संस्कृतिके संगमके परिचायक हैं। इन अवशेषों द्वारा हम भारतनिवासियोंकी उदार नीतिका अच्छा अनुमान लगा सकते हैं। संस्कृतिका भाँति साहित्यादि क्षेत्रोंमें हमें भारतीय मनिषियोंकी उसी उदार नीतिका परिचय मिलता है। भारतीय वैद्यक और ज्योतिष-विज्ञानको ही लीजिए; उसमें ग्रीक, यूनान फारस आदि कई विदेशीके विज्ञानको अपनाया गया प्रतीत होगा। तिब्ब-सहावी आदि विदेशी वैद्यक ग्रंथोंके कई हिन्दी पद्यानुवाद प्राप्त हैं, जिनमेंसे जैन विद्वान् मद्वक्चन्दका “वैद्य विलास नाम अनुवाद भी उल्लेख योग्य है। इसी प्रकार ज्योतिषमें रमल आदि विद्याएं, शकुनावली आदि ग्रंथ अब यही भारतीय विद्वानों द्वारा संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओंमें पाये जाते हैं। जैन विद्वान् मेविज्ञय, विजयदेव मुनि एवं भोजसागर-के रमलशाल उपलब्ध हैं।

बीकानेर राज्यकी अनूप संस्कृत लायब्रेरीमें एक ऐसा ग्रंथ उपलब्ध हुआ है जो फारसके ज्योतिष विज्ञानसे संबद्ध है। प्रस्तुत ग्रंथका नाम ‘उस्तारलाव यंत्र’ सटीक है। अभी तक यह सर्वथा अज्ञात रूपमें रहा है और उसकी एक मात्र प्रतिलिपि उक्त लायब्रेरीमें ही उपलब्ध हुई है। अपने विषय पर भी भारतीय विद्वानों द्वारा रचित यह एक ही ग्रंथ है। इस कारण इसका महत्व निर्विवाद है। कई वर्ष पूर्व मैंने यह ग्रंथ देखा था पर उस समय इसका नाम विचित्रसा लगानेके साथ विषय भी स्पष्ट नहीं हो सका था, इसीलिये अब तक उस पर प्रकाश नहीं डाला गया। जब विद्रदर्वय पूज्य मुनि श्रीपुण्यविजयजीका चतुर्मास बीकानेरमें हुआ था और पुरातत्वाचार्य मुनि जिनविजयजीका हमारे यहाँ पधारना हुआ, अतः इन दोनों विद्वानों और अन्य मुनियोंको मैं अनूप—संस्कृत—लायब्रेरीका अवलोकन करानेके लिये ले गया तब इस ग्रंथकी प्रतिको देखकर मुनि पुण्यविजयजी और विनयसागरजीको ग्रंथका नाम बड़ा विचित्र सा लगा और उन्होंने मुझसे पूछा कि यह ग्रंथ किस विषयका है? मेरे यह कहने पर कि ग्रंथ मैं पहले ही देख चुका हूं, विषय स्पष्ट नहीं हुआ, तो आपने उसे देखना प्रारंभ किया और उक्त लायब्रेरीमें पीतलके कुछ यंत्र ज्योतिष संबंधी पढ़े हुए थे, ऐसे ही किसी यंत्रसे संबंधित इस ग्रंथको बताया। उस समय तो अवकाशाभावसे उसको पढ़कर विशेष नोट नहीं ले सका, पर इस महत्वपूर्ण ग्रंथका परिचय विद्वत्-जगत्को अवश्य कराना

अंक : १ ]

उस्तरलाव यंत्र संधि....थंथ

[ २३

चाहिए, सोचकर अन्य एक दिन जाकर उसके नोट्स ले आया जिसे पाठकोंकी जानकारीके लिये यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है।

**प्रति-परिचय-प्रस्तुत** प्रथकी प्रति १२ पत्रोंकी है, जिनमेंसे पहले दो पत्रोंमें मूल संस्कृत प्रथ ३८ श्लोकोंमें है। अवशेष १० पत्रोंमें पहले मूल श्लोक फिर उसकी संस्कृत टीका-और तदनन्तर गजस्थानी भाषामें स्पष्टीकरणरूप भाषाटीका है। प्रारंभिक दो पत्रोंमें मूल प्रथ ४९ पंक्तियोंमें लिखा हुआ है और प्रतिपंक्ति ४२के लगभग अक्षर हैं। अवशेष १० पत्रोंमें प्रति पृष्ठ १४ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति ४० अक्षर हैं। प्रति संवत् १६००के चैत वदी ८ रविवारको लिखी गयी है, आगे पुण्यिकालेख पर हरताल फिरी होनेसे अक्षर दब गये हैं, अतः पढ़े नहीं जा सके।

**उस्तरलाव शब्दका अर्थ** -प्रथके नाम उस्तरलावके संबंधमें अनुसंधान करने पर उर्दू-हिन्दी कोषमें वह 'उस्तुरलाव' और उसका अर्थ 'नक्षत्र यंत्र' लिखा भिला है। (उस्तुरलाव-संज्ञा खी० (य००) नक्षत्र) विशेष जानकारी अपेक्षित है।

**ग्रंथकार-** ग्रंथकारने प्रारंभिक दो श्लोकोंमें अपना नाम 'मेवरत्न' दिया है। इसके अतिरिक्त उसके गच्छ, गुरु, और रचनासमय आदिके संबंधमें कुछ भी जानकारी इस ग्रंथमें नहीं दी गयी है, पर कुछ वर्ष पूर्व इन्हीं ग्रंथकार द्वारा रचित 'सारस्वत-प्रक्रिया-व्याकरण'की दीपिका टीका उपलब्ध हुई थी जिससे तीनों वातोंका पता चल जाता है। सारस्वत दीपिकाकी प्रतियों तो कही उपलब्ध हुई हैं पर इनमेंसे अधिकांश प्रतियाँ पूर्वाधिकी हैं, अतः उनमें रचनाकाल और गच्छका निर्देश नहीं पाया जाता, उनसे तो केवल ग्रंथकारके गुरुका नाम विनयसुन्दर था यही पता चलता है, पर हमारे संग्रहमें इसके उत्तराधिकी एक प्रति उपलब्ध है जिससे ये बड़गच्छीय थे और इस दीपिकाकी रचना संवत् १५३६में हुई है, निश्चित होता है, प्रशस्ति श्लोक इस प्रकार है—

"विनयसुन्दरं सच्चरणाम्बुजप्रवरेण्यप्रवित्रितगस्तकः ।

विद्धे स्म च मेघ इमं, मुदा कुतुगुणेषु यशांककः ॥ ॥

इति श्रीवटगच्छाम्बुजाकरविकासनदिनकरश्रीविनयसुन्दरशिष्यमेवरत्नविरचिता सारस्वत-दीपिका संर्पणम् (र्णा) ॥

जिनरत्नकोषके पृष्ठ ४३४में इस टीकाका नाम 'दुंटिका' और ग्रंथकर्ताको बृहत्-खरतरगच्छीय होना बताया है। ग्रंथका परिमाण भी उसमें ४५०० श्लोकका होना बताया गया है, पर टीक नहीं है। उपरोक्त प्रशस्तिसे उनका गच्छ, 'वटगच्छ' निश्चित ही है। ग्रंथके परिमाणके संबंधमें मैंने इसकी प्रतियोंका निरीक्षण किया तो पूर्वाद्विकी सबसे प्राचीन प्रति संवत् १६०५की लिखी हुई महिमाभक्ति भंडारमें उपलब्ध हुई। उसके पत्र १०९ हैं। प्रति पृष्ठ १६ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति करीब ५६ अक्षर हैं, जिसकी गणना करनेसे

२४ ]

श्री. जैन सत्य प्रकाश

[ वर्ष : २०

पूर्वार्द्धका परिमाण ६००० के करीबका बैठता है। हमारे संग्रहकी उत्तरार्द्धकी प्रतिमें १५०० श्लोक करीब हैं। इस प्रकार पूरी प्रतिका परिमाण ७५०० श्लोकका होता है। महिमाभक्ति भांडारकी प्रतिमें ग्रंथकारको 'बृहदगच्छीय' लिखा है, बठगच्छीय, बृहदगच्छ और बड़गच्छ तीनों एकार्थक है। प्रशस्ति इस प्रकार है:—

"इति श्रीबृहदगच्छे वाचकश्रीविनयसुन्दरशिष्य-मेघरत्नविरचितायां सारस्वतदीपिकायां तद्वित्रप्रकरणार्थः ॥

**लेखन पुष्टिका**—सं० १६०५ वर्षे कार्तिक सुदी ११ दिने थावरवारे श्रीबृहत्-खरतरगच्छे श्रीजिनमाणिक्यसूरीविजयराज्ये ॥ वा० श्रीक्षेमकीर्तिसदगुरोस्तेषां शिष्य वा० श्रीक्षेमराजमहोपाध्यायमिश्रास्तेषां विनयाणूनां वा० श्रीदयातिलकगणिः, तच्छिष्यः प्रमोद-माणिक्यगणिः, तच्छिष्यः पंडितपदामंदिरसुनिः, पं. गुणदंगसुनिः, पं. दयारंगसुनिः, चिरंजीवी जैसिंघकृते प्रतिरियं लिखिता स्वपरोपकाराय ॥ शुभं भवतु । लेखपाठकयोः कल्याणं भवतु ॥ श्रीविनादेसरमध्ये श्रीकुन्त्युनाथप्रसादात् ॥ शुभं भवतु । कुंवर—श्रीरत्नसीविजयराज्ये श्रीपार्श्व-नाथप्रसादात् शुभं भवतु । श्रीजिनकुशलसूरीप्रसादात् शुभं कल्याणं कुरु कुरु वाचकानाम् ॥"

प्रति खरतरगच्छकी लिखी हुई है और लेखकने ग्रन्थकारको बृहदगच्छीय बतलाया है। अतः संदेहकी कोई गुंजाईश नहीं। प्रति जैसिंहके लिये लिखी गयी है। संभव है इसके पूर्व 'चिरं' शब्द होनेसे उनकी उस समय दीक्षा नहीं हुई होगी, छोटी ही उमर होगी पर ये जैसिंह आगे चलकर बहुत बड़े विद्वान हुए हैं। उनका नाम जयसोम उपाध्याय था। 'कर्मचन्दमंत्रिवंशप्रबन्ध, पौष्ट्रपद्मिनिशिका, प्रश्नोत्तर' आदि ग्रन्थ प्राकृत, संस्कृत और राज-स्थानी तीनों भाषाओंके उपलब्ध हैं। अपने समयके खरतरगच्छीय विद्वानोंमें यह बड़े गीतार्थ माने जाते थे। इनके शिष्य महोपाध्यात्र गुणविनय और प्रशिष्य मतिकीर्ति भी अच्छे विद्वान थे।

इस विद्वत्परंपराका परिचय हमने अपने 'युगप्रधान जिनचन्द्रमूरि' और 'नेमिदूत-काव्यशक्ति'की प्रस्तावनामें दिया है। 'सारस्वतदीपिका'की एक प्रति अनूपसंस्कृत पुस्तकालय, उज्जैनके यति प्रेमविजयजीके संग्रहमें और भांडारकर इस्टीट्यूट (पूना)में भी है। स्व० सुनि हिमांशुविजयजीने इसके मंगलाचरणके श्लोक आदि उद्धृत करते हुए 'प्राचीन ग्रन्थ परिचय' शीर्षक लेखमें इस वृत्तिका परिचय दिया है। आपने लिखा है—'यह वृत्ति बहुत सुन्दर और विशद है, अतः इसके प्रकाशन होनेसे जैन और जैतनेर सभी व्याकरणके विद्यार्थियोंको बड़ा लाभ हो सकेगा।

[ क्रमशः ]

१. कातंत्रके बाद सारस्वत व्याकरणका जैन समाजमें बड़ा प्रचार रहा है। इस पर १०-१२ टीकाएँ जैन विद्वानों द्वारा बनाइ हुई उपलब्ध हैं जिनमें मेघरत्नकी दीपिका सबसे प्राचीन है। इसके परवर्ती चंद्रकीर्तिसूरि-टीका तो कुछ प्रसिद्ध है, जिसके जैनेतर संस्थाओंने कहे संस्करण निकाले हैं।

## ‘प्रेमवाणी’ पुस्तिकाना पडवो।

[ सौराष्ट्र अने गुजरात भरमां ‘प्रेमवाणी’ पुस्तिकाना प्रचारथी केवो अनिष्ट पडवो। पडवो छे एनी भूमिका अने परिस्थिति अंगे पू. प. श्री कनकविजयल म.ना पत्र खूण सूचक होवाथी अहीं आपीचे छीचे. साथीसाथ ए पुस्तिकाना विरोध करता ठरावो अने ताचे कचां कचांथी तेमना पर आय्या छे, तेना समाचार अहीं आपीचे छीचे. सं.पा.]

### पू. पंत्यासल म. ना पत्र

**२०७५२—** नैन तपगच्छ उपाध्य: मांडवी चोक, हेशेरी; ता. २२-६-५४.

प. कनकविजयलगाणि आहि तरश्ची: तंत्री श्री नैन सत्य प्रकाश, व्यवस्थापक: धर्मशील पडित श्रीयुत अंबालाल प्रेमचंद येाञ्च: धर्मलाल. अने हेवगुरुनी दृष्टाथी सुभशाता छे. सत्यप्रकाश-ना यालु अंक जेयो: समयोगित ने कांઈ लभाणु तमे संपादकायमां लघेल छे, ते यथार्थ छे अने आवश्यक तथा सार्थक छे.

‘प्रेमवाणी’ पुस्तिकाना लभाणुथी आपणुने कांઈ एटलु लागतुं नथी, पणु आने सौराष्ट्रमां नाना गामधारी भांडीने भोया शहेर सुधीमां ने अेकतानी सांकणजेाईने पडी छे, तेमां आ एक इट्टा पडे छे. गमे तेवा भाणुसो हेवद्रव्य माटे के भूर्ति या भंहिर माटे ऐले के लघे ते माटे आपणुने कशु लागे नहि. कारणु के, वर्तमानयुगमां आवृ अवृ यालवानुं.

पणु आ आजु: १वेतांशर संप्रेहायना भंने हिरकांगो अँडक्यपूर्वक रखा छे, तेमां वर्धमान अमण्डलाना प्रेयारमंत्री हेठ पंजाना प्रेहशमांथी अचानक पहेल वहेला अने आपीने ने आ धाक्का करे छे अने गेताना अनुयायी द्वारा ते पुस्तिकाना देश-परदेशमां ने प्रचार करावे छे, तेमां ने संप्रेहाय अनून आम करी रख्यु छे, तेनो १ आपणे विरोध करवानो रहे छे.

व. भूर्ति. नैनोना धार्मिक दृष्ट्यानी लोकाभां गेसमज आभां धरादापूर्वक जेसी करवानो आलीश प्रयत्न करवामां आयो छे के नजेनु नैनो पैसा टेवमंदिरेमां भेगा करे छे, कांઈ जलती मानवह्या तेमने नथी. ने नैनो उदार हाथे हवाहानना इङ्ग्रेजामां लागे, भरचे छे, तेनो भर धरादापूर्वक लोकमानस विकृत थाय तेवा आ प्रेयारमां सिद्धपूर्वक प्रयत्न थयो छे.

जगदुशा, भाभाशा, दयालहास, वरतुपाल, विमणशा वरेवेये भंहिरे अंधायां छे, ते रीते परेपकारनां कार्यों पणु कर्यों छे. आने पणु व. भूर्ति पूजक संप्रेहायना नैनो उदार हाथे उवह्याना सत्कर्योमां पेतानी संपत्तिनो थुल व्यय करी रखा छे.

सौराष्ट्रभरमां स्थानदोमां आ पुस्तिकाना प्रचार थयो छे, एटले लोकमानसमां आपणा प्रत्ये दृष्टु पैदा करवानो १ आभां आशय छे. आभां अत्रेना श्रीमंत वर्गना धमंड या संप्रेहाय अनूनतो सलकार मल्यो छे. नहिलर अल्लार सुधी आ आजुना संप्रेहायना स्थानकवासी साधुओ डाक्क हिवसे आवृ ऐले के जाहेमां प्रचार करे, तेवृ अन्यु नथी.

राजांकरमां तेओनां २००० धर छे. स्थिति संपत्र छे. गोंड, मेरायी, वांकनेर, गोरंदर, जेतपुर, जूनागढ वरेमां तेओनी वस्ती वधारे. स्थितिसंपत्र पणु सारा; एटले आ रीते संप्रेहायिक

२६ ]

## श्री. नैन सत्य प्रकाश

[ वर्ष : २०

अनूननो प्रवार करवामां तेए साहस करी रखा छे. आजे २०-२० हिवस थथा, अनेनो आपणे संधं ते लोडेना आणेवानो साथे वायाधाट करी रखो छे, इक्का चोपडी पाणी घेंगी ले अने भू० ५०० संप्रहायना संधीची लागणु हुलाई छे. ते माटे हिवगीरी व्यक्त उरै; आटली ४८ शरद, छतां ते लोडे क्का सहेज पण नमहु नथी आपता, आपणु ३०० धरै; अभुक्त रिथतिपान; अने आकीना साधारण; अनो ए लोडे गेरलाल ले छे.

ऐस्ते हवे हवे अनेनो संधं ठराव करनार छे. बाडी सौराष्ट्र तथा गुजरातना श्रीसंघी तरक्की विशेषना ठरावा तथा तारा स्थान संधं पर आवी रखा छे.

नागपुर, भोरणी, वरावण, वांकनेर, जमनगर, जम क्केराणा, पालीताणा, महेसाणा, साणुंद, दादर, ग्रामासपाटण, पाटण-गूजरात धसाहिना आव्या छे.

आना अंगे वर्तमान परिस्थिति तमारी दृष्टि समक्ष जणावी छे; पुस्तिकाना लभाणुनो विशेष, इक्का ले मानस आवी पूऱे काम करी रवूऱे छे, अने परिणामे ले प्रदेशमां आजे खंने संप्रहायना भाई-अहेनो एक नाना गामधामां एकहिल पूर्वक अंक्य साधी रखा छे तेमां, आ प्रवासना अनूनथी लयं कर विक्षेपनां भीज परिणामे ववाई रहेवानो भय छे, ते सामे ४ आ सावचेतीना सुर तरीके आपणु अथवा छे.

बाडी आ चोपडी करतां ये धाणु भराव आपणा संप्रहायना भाई ओ जोले छे—अने लभे छे, पण तेमां आवो भय नथी. तेमां भय लुहो छे. ए ४.



### ‘प्रेमवाणी’ना विशेषमां

ता. ११-१०-५४ सुधी ने जे गामे तथा शहेशना संधीचे तारो, ठरावा दारा स्था. नैन संध-राजकैट उपर ‘प्रेमवाणी’ने अंगे विशेष नोंधावो छे तेनी याहि—

**सौराष्ट्र:**—वेशवण, ग्रामासपाटण, जुनागढ, घोराळ, जमनगर, वणुथवी, वांकनेर, भोरणी, वटवाणु शहेर, जेरावरनगर, लींबडी, शोहेर, वरतेज, पालीताणा-भुशालभुवन, आरीसालुवन, नोंधवालदर, भोडी वावडी, गारीयाधर, भाणुवड, भूली, सायला, मांगरोल, चोडीला.

**गुजरात:**—झुग्गाडा, सभी, पाटण, महेसाणा, राधिन, सरीयाद, क्कोई, नडीयाद, सुर अंसात, नवसारी, वापी, दादर, माहुंगा, डोई, अमहावाद-उहेलानो उपाश्रय.

**भाराष्ट्र:**—शाहपुर, थोरी, नासिक, सीनर, वणी, भालेगाम, राजनांगाम, जलगाम, अमलनेर, सीरसाला.

कलकत्ता, नागपुर, जवाल-मारवाड.

- १५४ पू. आ. श्री विजयदर्शनसूरीधरण म. ना सदुपदेशथी श्री नैन संघ, तणाळ.
- १५५ पू. मुनिराज श्री धर्मसागरण म. ना सदुपदेशथी श्री नैन संघ, नागपुर.
- १५६ पू. आ. श्री विजयरामसूरीधरण म. ना सदुपदेशथी श्री नैन संघ, जवाल.
- १५७ पू. पं. श्री भानुविजयण म. ना सदुपदेशथी श्री नैन संघ, उल्लोड़ि.
- १५८ पू. आ. श्री विजयभक्तिसूरीधरण म. ना सदुपदेशथी शा. रतिलाल ओधवण, पालीताणा.
- १५९ पू. पं. श्री भगीरथविजयण म. ना सदुपदेशथी श्री नैन संघ, शाहपुर (थाणा).
- १६० पू. पं. श्री भेरुविजयण म. ना सदुपदेशथी श्री नैन वेतांबर मंहिरमार्गी संघ, साढी.
- १६१ पू. मुनिराज श्री कर्तिविजयण म. ना सदुपदेशथी श्री नैन संघ, घेंगलेलेर.
- १६२ पू. मुनिराज श्री भेरुविजयण म. ना सदुपदेशथी श्री नैन उपाध्य संघ, जूना डीसा.
- १६३ पू. मुनिराज श्री ललितविजयण म. ना सदुपदेशथी श्री नागराजण. अहोनी (आंध्र).
- १६४ पू. मुनिराज श्री राजेन्द्रविजयण म. ना सदुपदेशथी श्री नैन संघ, पाठीव.
- १६५ पू. उपा. श्री धर्मविजयण म. ना सदुपदेशथी शेठ आचुंदण कल्याणुजनी गेडी, लीभडी.
- १६६ पू. मुनिराज श्री ग्रीतित्वविजयण म. ना सदुपदेशथी नैन संघ, जगलपुर.
- १६७ पू. मुनिराज श्री अशोकविजयण म. ना सदुपदेशथी श्री नैन संघ, उणा.
- १६८ पू. मुनिराज श्री सुप्तोधविजयण म. ना सदुपदेशथी श्री नैन संघ, सरडारपुर.
- १६९ पू. मुनिराज श्री रुद्रकविजयण म. ना सदुपदेशथी श्री नैन तपगच्छ संघ, वांकनेश.
- १७० पू. आ. श्री विजयभुवनतिवाकसूरीधरण म. ना सदुपदेशथी श्री तपगच्छ नैन संघ, भांडवी.
- १७१ पू. मुनिराज श्री चिदानंदविजयण म. ना सदुपदेशथी श्री विजयआणुसुर भोटा गच्छ १० कमी. साणुंद.
- १७२ पू. मुनिराज श्री सोभायसागरण म. ना सदुपदेशथी श्री नरेंद्रलाई डाल्लालाई कापडिया, जंयूसर.
- १७३ पू. आ. श्री ऋष्टिसागरसूरीधरण म. ना सदुपदेशथी श्री नैन महाजन, दाठा.

पू. आ. श्री विजयकल्याणुसूरीधरण म. सं. २०१० ना श्रावण वहि ६ ना शेष जमनगरभाते काणधर्म पाठ्या.

पू. आ. श्री विजयवल्लभसूरीधरण म. सं. २०१० ना लाहरवा वहि १० ना शेष मुंबधिभाते काणधर्म पाठ्या.

बंने पू. आचार्य महाराजे अमारी समितिने उत्साह अने प्रेरणा आपता, तेमनी ज्ञाट अमारी समितिने ७ नहि पाणु आण्याये नैन समाजमां न पूराय ऐवी छे. आ प्रसंगे अमे तेमने कृतज्ञपणे श्रद्धांजलि धरीमे धीमे.

Shri Jaina Satya Prakasha, Regd. No. B. 3801 श्री जैन सत्य प्रकाश

# श्री जैन सत्य प्रकाश

## अंगे सूचना

### योजना

१. श्री. नैनधर्म सत्य प्रकाशक समिति  
द्वारा 'श्री. जैन सत्य प्रकाश' मासिक १६ वर्ष  
थायां प्रगट करवामां आवेद्ये.

२. एस समितिना आणवन संरक्षक तरीके  
इ. ५०० आ० इता तरीके इ. २०० आ०  
सहस्र तरीके इ. १०० राखवामां आवेद्या  
छे. आ सीते भद्र आपनारने कायमने भाटे  
मासिक भोक्तव्यामां आवेद्ये.

### विनांति

१. पूऱ्य आयामांद मुनिवरो चतुर्भास्तु  
स्थण नक्षी थां अने शेष काणमां ल्यां पिलहा  
होय एस स्थणानु सरनामुं भासिक प्रगट थाय  
ऐना १५ हिवस अगाड भोक्तव्यां रहे अने  
ते ते स्थणे आ भासिकना प्रयार भाटे आहो  
भनाववानो उपदेश आपता रहे एवा विनांति छे.

२. ते ते स्थणोमांधी भणा आनां प्राचीन  
अवशेषो कै ऐलिहासिक भासितानी सूचना  
आपवा विनांति छे.

३. नैनधर्म उपर आक्षेपात्मक लेखा  
आहिनी सामग्री अने भासिती आपता रहे  
ऐना विनांति छे.

### आहोकैने सूचना

१. "श्री जैन सत्य प्रकाश" मासिक प्रत्येक  
अग्रेल भासितानी १५मी तारीखे प्रगट थाय छे.  
५. लेखा कागजानी एक तरह वाची शक्ति  
तेवी रीते शाईथी लभी भोक्तव्या.

२. लेखा टूंका, मुद्रासर अने व्यक्तिगत  
टीकात्मक न होवा जेहो ए.

३. लेखा प्रगट करवा न करवा अने तेमां  
पत्रनी नीतिने अनुसरीने सुखारोपधारे करवानो  
हक्क तंत्री आधीन छे.

भुद्धक : गोविंदलाल जगरीभाई शाह, श्री शारदा मुद्रणालय, पानडीर नाळा, अमरावाड.

प्रकाशक : वीमनलाल गोडगांव शाह.

श्री. नैनधर्म सत्य प्रकाशक समिति कार्यालय, जेशंगलाईनी वाडी, धीकोंडा रोड-अमरावाड.